HARYANA VIDHAN SABHA

DEBATES

12th February, 1971

(Morning Sitting)

Vol. 1-No. 5

OFFICIAL REPORT

CONTENTS

Friday, the 12th February, 1971 (Morning sitting)

	Page
Discussion on Governor' Address (resumption)	(5) 1
Point of Order	(5) 9
Personal Explanations	(5) 9
by—	
(i) Shri Banarsi Dass Gupta	
(ii) Chaudhry Dal Singh	
Discussion on Governor's Address (Resumption	(5) 14

Personal Explanations) (5) 17

by—

(i) Home Minister (Shri K.L. Poswal).

(ii) Chaudhry Jai Singh Rathi

Discussion on Governor's Address (Resumption) (5) 21

Personal Explanation (5) 31

by—

Deputy Minister, Transport

(Sardar Piara Singh

Discussion on Governor's Address (Resumption) (5) 32

Personal Explanation (5) 68

by—

(i) Chaudhry Dal Singh

(ii) Chaudhry Jai Singh Rathi

Discussion on Governor's Address (Resumption) (5) 73

HARYANA VIDHAN SABHA

Friday, the 12th February, 1971 (Morning Sitting)

The Vidhan Sabha met in the Hall of the Haryana Vidhan Sabha, Vidhan Bhavan, Sector-1, Chandigarh, at 9.30 A.M. of the Clock. Mr. Speaker (Brig. Ram Singh) in Chair.

DISCUSSION ON GOVERNOR'S ADDRESS (Resumption)

Mr. Speaker : Honourable Members, now we continue with the discussion on the Governor's Address. I suggest that normally a Member may speak for ten minutes and only in special cases, 15 minutes will be allowed, because there are still a large number of Members to speak. Chaudhri Jai Singh Rathi who was in possession of the House on that day, may please speak.

मुख्य मंत्री (श्री बन्सी लाल) : वे कल भी दस–पन्द्रह मिनट ले चुक हैं इनको दौबारा आईम न दे।

चौधरी जयसिंह राठी : जिन्होनें पचास मिनट कल लिए है उनके हिस्से में से भी टाईम काट लिया जाना चाहिए।

श्री अध्यक्ष : टाईम दोनों को बराबर मिलेगा।

श्री बन्सी लाल : स्पीकर साहब बराबर कैसे मिलेगा ? हम टू–थर्ड है और फिर उनमें से कितने सदस्य चले गये है।

श्री अध्यक्ष : आपने ही तो कहा था कि जितना टाईम यह चाहे उतना दे दे।

श्री बन्सी लाल : यह तो मैं न कहूं तब भी आप दे सकते है।

चौधरी जयसिंह राठी : (नौल्था) : स्पीकर साहब, कल जब हाउस एडजर्न हुआ उस वक्त मैं चन्डीगढ़ के विषय मे जिक्र कर रहा था। जिस वक्त चण्डीगढ़ का फैसला हुआ, मेरे साथ चौधरी बंसी लाल जी की बात हुई थी। फैसले के बाद ही मैं उनसे मिला था।

Shri Bansi Lal : He need not name anybody. He should not talk about personal things. In fact, I have never talked to such people about personal matters.

चौधरी जयसिंह राठी : मेरी चौधरी बन्सी लाल जी से बात हुई। मैंने कहा कि चन्डीगढ़ का जो कुछ फैसला हुआ है वह इस प्रदेश के साथ बड़ी भारी ट्रेजड़ी है। मैंने कहा कि हमारे प्रदेश के साथा जहां ट्रेजड़ी है वहा एक बड़ी भारी कलैमिटी भी है। ट्रेजड़ी और कलैमिटी का लफज समझ कर इन्होंने कहा कि दोनो ही बातें कैसे? मैंने इनको बताया कि इन दोनो शब्दों मे बड़ा फर्क हैं अगर हरियाणा से चन्डीगढ़ चला गया और उस पर आपकों कोई नुकसान हो जाये तो बड़ी भारी ट्रेजड़ी हैं उसी तरीके से अगर चन्डीगढ़ की लेक में पैर सिलप होकर कोई गिर जाये, अगर डूब जाये तो वह ट्रजड़ी होगी लेकिन अगर कोई बचा

दे तो कलैमिटी ही हुई। स्पीकर साहब, गवर्नर साहब का एड्रैस पढ़ने के बाद चंडीगढ़ का मामला ऐसा लगता है कि अगर चंडीगढ़ हरियाणा को मिल जाता तो देश में आग लग जाती, या कोई तबाही हो जाती क्योकि उसमें कहा गया है कि यह सब कुछ गेंटर नेशनल इन्ट्रैस्ट मे फैसला मानना पड़ा हैं अगर पंजाब को मिल गया तो इन्होने कोई लफज नही कहा, बिल्कुल काम एण्ड क्वायट बैठ गये। गवर्नर साहब ने, सरकार ने या चीफ मिनिस्टर साहब ने यह नही विचार किया कि चन्डीगढ़ का हरियाणा से चले जाने में हमारी बेइज्जती भी हुई है। ये जो कहते है ये तो एक आंसू पोंछने की ही बात करते है।

स्पीकर साहब, मैं ज्यादा टाईम नहीं दूंगा। कल भी यहां प्रोहिबिशन के बारे में जिक्र किया गया। इस ऐड्रैस में भी आया हैं कल मेरे भाई बनारसी दास जी कह रहे थे कि सरकार ने प्रोहिबिशन कर दी। बड़ा भारी काम किया है।

श्री बनारसी दास गुप्ता : मैंने तो प्रोहिबिशन का जिक्र ही नही किया।

चौधरी जयसिंह राठी : चलो आपने नही किया तो मैं कर देता हूं। आपको याद दिलाता हूं। जहां तक प्रोहिबिशन का ताल्लुक है, यहां हाउस में उसके विषय में समाल भी पूछा गया कि किस–किस के खिलाफ केस है ? मैं यहां हाउस मे ंचैलेन्ज करत हूं कि अगर सरकार एक इनडिपैन्टडेन्ट कमीशन बैठा दे और

इन्क्वायरी करा ले तो यह बात साबित हो जायेगी कि दादरी में राम विलास की इल्लिसिट लिकर के सिलसिले में जो चालान हुआ है उसमें लाला बनारसी दास गुप्ता पार्टनरथे। वहां पर खुले आम खराब बेची जाती थी।

श्री बनारसी दास गुप्ता : आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर, मैं पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन देने के लिए समय चाहुंगा।

श्री अध्यक्षा : आप बाद में दे लेना।

चौधरी जयसिंह राठी : आप बाद मैं कह लेना, सुनते रहे। जिस वक्त राम विलास का और इनका पैसे के मामले पर झगड़ा हो गया, तो इन्होने सरकार से उसका चालान करवा दिया। मैं यह नही कहता कि उनका झूठा चालान हुआ हैं चालान तो उनका सच्चा हुआ हैं परन्तु सोचने की बात यह है कि वह इतने दिनों तक चालान से कैसे बचता रहा ? पुलिस को पता था, सरकार को पता था अन्य लोगों को पता था कि वहां शराब बिकती है तो पहले चालान क्यों न हुआ ?

श्री बनारसी दास गुप्ता : मैं तो उनका नाम भी नही जानता।

चौधरी जयसिंह राठी : आप तो सिर्फ उनके काम को जानते हो आपको उनके नाम और शक्ल से क्या मतलब है ? काम आपका ठीक चल रहा था। तो स्पीकर साहब, प्रोहिबिशन के लिए इन्होने महेन्द्रगढ़ जिले को छांटा हैं स्पीकर सहाब, एक बात याद

आ गई कि बनारस का ठग बड़ा मशहूर होता है लेकिन इन्होंने तो बनारसी ठगों को भी मात कर दिया। वहां ऐसी ठगी से शराब बेची जा रही है जिसका कोई हिसाब नही हैं यह सब कुछ प्रोहिबिशन के कारण से ही हो रहा हैं इन्होने ऐसे भद्दे तरीके अख्तियार कियए हुए हैं इल्लिसिट शारब बेचने के लिए जिनके विषय में जिक्र नही किया जा सकता। जिस तरह से यह प्रोहिबिशन करना चाहते है इस तरह से बिल्कुल नही हो सकती है और न ही उस एरिया में प्रोहिबिशन है।

श्री बनारसी दास गुप्ता : कोई सही बात भी तो किया करो।

चौधरी जयसिंह राठी : अगर मैंने गलत कहा है तो इन्क्वायरी करवा लो। स्पीकर साहब, गवर्नर एड्रैस मे हिसार यूनिवर्सिटी का भी जिक्र आया है। हिसार यूनिवर्सिटी के विषय मे गवर्नर साहब के एड्रैस में कहा गया है कि हिसार यूनिवर्सिटी ने पूरा काम शुरू कर दिया है। यहां पर चौधरी नेकी राम बैठे हैं मेरे रिश्तेदार है, मेरे बुजुर्ग है (विघ्न)

श्री बंसी लाल : आपके सारे ही रिश्तेदार है।

चौधरी जयसिंह राठी : आपके अलावा मेरे सारे ही रिश्तेदार है। चौधरी साहब, आप उनसे इन्कार करवा दो कि वे मेरे रिश्तेदार नही है। आप तो वैसे ही कहते हो। रिश्तेदारियों का तो दो ही आदमियों को पता हुआ करता था एक डूम को और दूसरे

ब्राह्मण को। मुझे तो पता है और सब को पता है कि वे मेरे रिश्तेदार है।

समाज कल्याण मंत्री (सूबेदार प्रभू सिंह) : आपकी रिश्तेदारियों का तो चमारों को पता होगा।

चौधरी जयसिंह राठी : मैं तो चमारों से आज भी रिश्ता करने के लिए तैयार है। अगर कोई वजीर रिश्ता करना चाहे तो मैं इंकार बिल्कुल नही करूंगा।

तो स्पीकर साहब मैं अर्ज कर रहा था कि वे मेरे रिश्तेदार है। इनके अजीज से मेरी बातचीत हुई। मैंने उनसे कहा अब तो आप भी किसी अच्छी जगह पर नौकरी कर लो। हां, मुझे हिसार यूनिवर्सिटी की बात याद आ गई। उन्होंने कहा कि मैं भी कोशिश कर रहा हूं जैसे श्री बंसी लाल का लड़का इण्डियन आयल कंपनी में गया है उसी प्रकार से शायद मेरा भी काम बन जाये। उस वक्त उन्होंने कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी के विषय में एक बात बतायी कि.....

Shri Bansi Lal : On a Point of Order, Sir. The Member is speaking since yesterday. Nobody can be allowed to speak for more than 15 minutes. He has already taken 26 minutes. There are many more Members on our side who want to speak. So, our time should not be wasted like this. this Member should be asked now to resume this seat and our Member asked to speak.

Mr. Speaker : How much more time does the non. Member want ?

Chaudhri Jai SinghRathi : Ten minutes.

Shri Bansi Lal : 15 minutes was the maximum limit fixed yesterday.

Mr. Speaker : I think, there was no limit fixed yesterday.

Shri Bansi Lal : It was. Even today, when the House just stated, you said the normally a Member could take ten minutes. but in an exceptional case he could be given 15 minutes. As the Member has already taken 26 minutes and has said nothing useful, he should now be asked to take his seat.

Mr. Speaker : When I came in yesterday, Shri Satya Narain Syngol was speaking and I think, he took half an hour or so to speak. Then, Chaudhri Lal Singh spoke and I am told he took about 48 minutes.

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, हामरी पार्टी को भी टाईम अलाट कर दें और उनको अलाट कर दें। फिर दोनों को टाईम बांट दे।

Mr. Speaker : More time will be given to the treasury Benches and to Shri Rathi, I will give only five minutes.

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, मेरी एक सबमिशन है कि मैं ज्यादा वक्त नही लूंगा। दस मिनट के अन्दर ही कनकलूड कर लूंगा।

Mr. Speaker : You have already taken 26 minutes. You can now take only five minutes more.

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, मैं अर्ज कर रहा था हमारे कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी के * * * *

Mr. Speaker : Let me make the position quite clear. As I said at the start of the session, normally a Member would be given only ten minutes. And, it is only in a special case that be would be given 15 minutes to speak.

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, उनके बहनोई मिस्टर बहुआ जो अब गवर्नर लगे है, वे इण्डियन आयल कम्पनी के चेयरमैन होते थे। चीफ मिनिस्टर साहब ने सौदा किया कि मै * * को यहां वाइस चान्सलर लगा देता हूं तुम मेरे लड़के को इण्डियन आयल कम्पनी में लगा दो। ये तो इस किस्म का सौदा करते है।

Shri Bansi Lal : On a Point of Order, Sir. The hon. Member is just talking out of his mind. इनका सारा कुटुम्ब, खानदान इस किस्म का है इसलिये यह ऐसा ही दूसरों को समझते है। यह बिल्कुल गैरजिम्मेदाराना बात करते है। ये बिल्कुल वाहियात बकवास की बातें है। जब मेरा लड़का नौकरी पर लगा उस वक्त * * * * * चीफ जस्टिस होते थे। He is talking non-sence.

चौधरी रणबीर सिंह : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, सरं श्री देवकान्त बड़आ हमारे मानयोग गवर्नर है और * * साहब वाइस चान्सलर हैं दोनों इस सदन के सदस्य नही है और न ही ये सदन में आकर जवाब दे सकते है। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि उनके सिलसिले मे जो भी बात कही गई है उसको एक्सपन्ज कराया जाये।

श्री बन्सी लाल : स्पीकर साहब, आपकी नौलेज में है कि ये मेरे पास कई बार भीख मांगने आये थे। उस वक्त इन्होंने कहा था कि मुझे डिप्टी मिनिस्टर बना दो। काबिल नही एम.एल.ए. के, अब रो रहे है।

Mr. Speaker : The reference made to the Vice-chancellor is to be expunged.

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, इती लूज बात करने की इजाजत न दी जाए : Otherwise the majority has also a right and it will be compelled to exercise its right.

Mr. Speaker : I think let the hon. Member complete his speech and if you want further time for explanation I will give you time as has been done in the case of Mr. Banarsi Dass Gupta.....

Shri Bansi Lal : I need not give any explanation. It should be given by the like him and not by me.

Mr. Speaker : So, the main thing is that you (Chaudhri Jai Singh Rathi) please continue you speech and you have four minutes to go and let us not indulge in unnecessary or undesirable things. (Interruptions and noise)

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, में फैक्टस से बाहर नही जाऊंगा। चीफ मिनिस्टर साहब ने वैसे ही कह दिया है।

Shri Bansi Lal : Yes, I have said he is * * * *

Mr. Speaker : Chaudhri Sahib, you will have your time if you want. You will have as much time but let him finish his speech and then we shall see.

चौधरी रणबीर सिंह : मैंने प्वायंट आफ आर्डर रेज किया था उसके बारे में आप ने कया किया है।

श्री अध्यक्ष : वह पोर्शन मैंने ऐक्सपंज करा दिया है।

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा कि मैं मिनिस्टर बनना चाहता था। एक एम.एल.ए. चीफ मिनिस्टर, मिनिस्टर या डिप्टी मिनिस्टर बनने की ही ख्वाहिश रख सकता है न कि चपड़ासी की।

श्री बंसी लाल : * * * * * * * *

Mr. Speaker : May I request the hon. chief Minister to let the hon. Member speak and then he will have time to say anything he likes and you know that these are personal reflections.....

श्री बंसी लाल : इसके पास और इनके खानदान के पास है क्या सिवाए इसके ? (व्यवधान)

चौधरी जयसिंह राठी : मुझे भी मौका दिया जाये यह मेरे खानदान तक जाना चाहते है। यह मेरे खानदान की बात बता दें मैं इनके खानदान की बात बता देता हूं। यह जो तरीके अख्तियार कर रहे है ये ठी नही है। ये भी ओपनली आ जायें मैं तो बड़े हम्बल ढंग से सबमिशन कर रहा हूं और I have always taken my seat when he (Chief Minister) gets up.

(Interruptions and noise)

Mr. Speaker : Where will it take you ? Let me make an observation about what Chaudhri Sahib has said.

Unfortunately from the very start of the day today. we are losing tempers; we are indulging in rather harsh things. With a view to maintain the decorum and dignity of the House and to maintain normal good feelings among colleagues, I feel that unnecessary remarks may not be made.

कृषि मंत्री (चौधरी भजन लाल) : स्पीकर साहबत्र जब से हाउस चल रहा हे अपोजीशन की तरु से कोई रिवनेबल बात नही की गई सिवाये कीचड़ उछालने के। इन से कहे कि मेहरबानी करके यह ठीक बात करे।

चौधरी दल सिंह : मेरा प्वायंट आफ आर्डर यह है कि ये ठीक तरह से कोई बात नही सुनना चाहते क्या यह ठीक है ? मुख्य मंत्री कहते है कि उनका खनदान खराब हैं क्या वे ऐसा कह सकते है ? He has no right to say that and if he says like that we have also the right to say something wrong about that. He cannot go on saying like that (Interruptions and noise). हमें उनके खानदान का अच्छी तरह से पता है, उनका खानदान यहां थोड़े ही बैठा हुआ है।

श्री बंसी लाल : मै आपकी बातों का भी जो आपने कल कही है जवाब दूंगा (विघ्न)।

चौधरी दल सिंह : हमें डराने की बातें क्यों करते हो, क्या जवाब देंगे आप ?

श्री बंसी लाल : अब बता दूंगा केसे जवाब देते है, खा गए दुनिया को लूट कर, अब बातो करते है। (विघ्न) (शोर)

चौधरी दल सिंह : आप क्या बतायेंगे ? आपने तो हरियाणा में कुरप्शन का बाजार खोल रखा है। मैं तो कहूंगा यह खूनी सरकार बैठी है।

श्री बंसी लाल : आपकी तो * * * * * * * * * * *

*अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्यवाही से निकाल दिया गया है।

Mr. Speaker : I suggest that his sort of a thing will not take us anywhere. It is bad for all of us. So I suggest, let us cool down our tempers and there are ways and means of saying thing. The same thing could be said in a reasonable and polite manner and let us maintain the usual good relations that I have seen in this House and let us not lose our tempers. I request you all kindly to say a thing in a reasonable and decent manner which done not hurt any individual persona. So I really feel that unfortunately today we have rather started in a wrong form. I would request all hon. Members to pacify their feelings and try to see that the proceedings of the House are conducted in a decent manner.

POINT OF ORDER

चौधरी रणबीर सिंह : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। वैसे तो उसके बाद कई बातें बहुत आगे चली गई लेकिन वह एक मैम्बर की पर्सनल बात हैं वे पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन दे

सकते है। अध्यक्ष महोदय, यहां एक चपड़सी और एक मैंम्बर का मुकाबला किया गया। चपड़ासी हमारे देश का बहुत मानयोग शहरी है, हमारे देश के हमारे प्रदेश के प्रतिरिनधि और सदस्य भी बड़े मानयोग शहरी है। मैं आपसे चाहूंगा कि यह जो मुकाबला किया गया हैं इस मुकाबले के लफजों को ऐक्संपज किया जाए।

Shri Bansi Lal : No, they should not be expunged. They are parliamentary. आप आराम से स्टडी कर ले।

Mr. Speaker : We will examine these things and if there is anything against the Rules as far as this remark is concerned, I will give my ruling.

PERSONAL EXPLANATIONS

By—

(i) **Shri Banarsi Dass Gupta**

(ii) **Shaudhri Dal Singh**

श्री बनारसी दास गुप्ता (भिवानी) : स्पीकर साहब, मेरी सबमिशन यह है कि कल से राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर डिबेट चल रही है, वोट आफ थैंक्स पास करना है। काफी समय तक मैं बोला। तमाम स्पीच रिकार्डिड है। किसी एक व्यक्ति के विरूद्ध मैंने कोई व्यक्तिगत आरोप नही लगाया। मैंने अपने भाषण में विरोधी दल के रोल का जिक्र किया। मैंने किसी सदस्य क खिलाफ व्यक्तिगत आरोप नही लगाया। आप कल से सुन रहे है, चौधरी दल सिंह ने अपने भाषण मे खुल्लमखुल्ला एक मिनिस्टर

के खिलाफ आरोप लगाया कि उन्होने बीस हजार रूपया लेकर अपनी जेब में डाल लिया या पांच हजार रूपया ले लिया। अभी राठी साहब ने यहां पर कहा कि मेरी शराब के ठेके में पार्टनरशीप है। हमें समझ में नही आता कि आया इन के पास कहने के लिए कोई सामग्री है या ये सिर्फ व्यक्तिगत आरोप लगाने के लिए ही यहां आते है।

श्री बंसी लाल : सारा कुन्बा ट्रैक्टरों की एल अमैंट करने में पेसा खा गया।

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, मै चैलेंज करता हूं इन्होंने खुद इन्क्वायरी करवाई है और इन्हें सारे हरियाणा में कोई भी आदमी यह कहने वाला नही मिला कि ट्रैक्टरों की अलाटमैंट में बेईमानी हुई है।

श्री बनारसी दास गुप्ता : स्पीकर साहब, मैं यह दिवेदन कर रहा था कि आप इस बात के लिये हाउस के कस्टोडियन है। आप यह देखें कि जो व्यक्ति अपनी जबान के ऊपर लगाम न लगाये और निराधार इल्जाम लगाता है उसकी जबान पर लगाम लगानी चाहिये। अगर मैं उन के पर्दे खोलने लगूं तो अच्छी बात नही होगी। मुझे सब पता है कि इन्होने क्या किया है, इनका क्या क्रेक्टर है? इन सब के बावजूद भी हम व्यक्तिगत मामलों के अन्दर नही जाना चाहते क्योकि यह हाउस इस बात के लिए नही बना कि हम यहां किसी व्यक्ति के खिलाफ कीचड़ उछालें। हम डिवैल्पमैंट

की बाते करना चाहते है। इस हमाम के अन्दर ये सब नंगे है। अगर विरोधी दल का रोल गलत है तो हम उसका जिक्र जरूर करेंगे। आपने देखा है कि हमारे किसी भी मैम्बर ने कोई व्यक्तिगत आरोप नही लगाया और न लगाएंगे लेकिन उनके पास सिवाये व्यक्तिगत लांछन लगाने के और कोई मसाला नही हैं बोलने के लियें सामग्री नही है। मैं आपसे अज्र करूंगा कि उनकी जबान पर लगाम लगाए और यह जो इल्जाम लगाते है वे बन्द होने चाहिये।

Mr. Speaker : Let me make an observation on what Mr. Gupta has said.

There is no doubt that it is in the interest of us all specially to maintain the dignity and decorum of this House that we must speak on a high plane on important mattes in a decent manner and in a manner thaqt does not hurt any individual.

On the other hand there are certain privileges of hon. Members and I shall certainly stop if any Rule is pointed out to me that so and so is not within the rules laid down. I can assure all the hon. Members of the House that I shall not allow such utterances in this House which are against the Rules of Procedure of the normal conduct of business of this House.

So, once again I will request you all to control your passions, your temper and see that we conduct our proceedings on a higher plane and without hurting any individual.

श्रीमती चन्द्रावती : जनाब, मै यह पुछना चाहती हूं कि श्री बनारसी दास गुप्ता की तरफ से जो शब्द कहा गया है, क्या वह अन–पार्लियामेन्ट्री है ?

Mr. Speaker : We will find that out.

चौधरी बनवारी राम : स्पीकर साहब, अंसम्बली या पार्लियामेन्ट जो हेती है, उसमें प्रदेश या देश की समस्याओं परबाते होती है परन्तु यहां पर घर की या दूसरी ऐसी वैसी बातें हो रही है जो कि ठीक नही है। मैं हैरान हूं कि चौधरी रणबीर सिंह यहां पर कैसी–कैसी बाते करते है। वे यहां पर अपोजीशन पार्टी का पार्ट प्ले कर रहे है या कांग्रेस पार्टी का पार्ट अदा कर रहे है। पहले चीफ मिनिस्टर बनने की खतिर पंडित जी की तरह यह माथे पर तिलक लगा कर आये थे.....

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, आप प्वायंट आफ आर्डर पर बोल रहे है या पर्सनल एक्सप्लेनेशन पर ?

चौधरी बनवारी राम : स्पीकर साहब, शुरू तो पहले चौधरी रणबीर सिंह ने किया है.....

श्री अध्यक्ष : 'बेहूदा' लफेज आन–पार्लियामैन्ट्री है। That will be expunged.

चौधरी दल सिंह (जुलाना) : मेरे बारे में गुप्ता जी ने यह कहा है कि इन्होंने मेरे खिलाफ कल भी कहा था और आज भी कहा है। जो कुछ भी मेंने कहा है वह एक–एक लफ्ज बिल्कुल

सही है उसमें कोई चीज गलत नही है। जो कुछ कारनामें इस सरकार के है, वह सब लोगों को पता है, कोई कहने की चीज नही।

श्री अध्यक्ष : फिर झगड़ा क्यों करते हो ?

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, मैं झगड़ा नही करता, मैं तो यह कहता हूं कि मैंने एक लफ्ज भी गलत नही कहा है।

Shri Bansi Lal : This is no explanation. This is an allegation againt another Member. He is so much irresponsible.

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, जो कुछ भी मैंने कहा है उसका एक–एक लफ्ज ठीक है, उसमें कोई भी चीज गलत नही है।

श्री बंसी लाल : मैनें इनको 5–5 रूपये की दुकान बन्द कर दी, दोनों भाइयों की, और आगे को भी लेने नही दूंगा।.....

श्री अध्यक्ष : आपकों कहने की क्या जरूरत है, मत लेने दो।

चौधरी दल सिंह : मैं तो यह चाहता हूं कि आपकी दुकान और भी ज्यादा चलती रहे। (विघ्न) स्पीकर साहब, मेरी गुजारिश यह है कि मैंने किसी मैम्बर या मिनिस्टर के बारे में जो कुछ भी कहा है उसका एक–एक लफ्ज ठीक है। उधर से कई बाते हमारे बारे में कही गई। हमें पूरा हक है कि हम भी उन

बातों का जवाब दें। गुप्ता जी तो बिस्कुत के डिब्बों में सोना भर–भर कर ब्लैक करते रह है।.....

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, ये तो शराब के डिब्बे भर–भर के बेचते रहे, यही तो इनका काम है।.....(विघ्न)

श्री अध्यक्ष : अब आप किस बारे में ऐक्सप्लेनेशन दे रहे है ? मैं यह समझता हूं कि हाउस का डैकोरम कायम रहना चाहिए।

चौधरी दल सिंह : लेकिन, स्पीकर साहबए चीफ मिनिस्टर साहब तो खानदान की बात करते है। हो सकता है राठी साहब के खानदान मे कोई नुक्स हो, लेकिन मेरे या राठी साहब के खानदान की बात कहना इसके लिए अच्छी बात नही है।

श्री बंसी लाल : फिर पहले उधर से यह बात क्यों शुरू की गई थी ?

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, हम इन्हे कुछ नही कहते जब तक कि ये हमें कुछ न कहे। लेकिन जब कोई सदस्य हमारे खिलाफ कोई गलत बात कह दे, तो यह हमारा हक भी है कि हम ठीक बात बताये। वह कहते तो बहुत कुछ है। लेकिन जो कुछ असलियत है वह सब लोग जानते है, उसके बारे में ज्यादा कहने की जरूरत नही है।

Mr. Speaker : I am greteful for what ou have said and I hope that both the sides will now agree to control passions and make a speechwhich does not hurt anyindividual.

श्री फतेह चंद विज : स्पीकर साहब, मेरा प्वायन्ट आफ आर्डर है अभी जो यह कहा गया कि उधर बैठने वालों ने वात क्यों शुरू की इसमें क्या हमारी तरफ बैठने वाले सदस्य भी शामिल है ?

श्री बंसी लाल : आप तो उधर नही, इधर आते है (हंसी).... विघ्न

Mr. Speaker : I remember, he said so.

श्री फतेह चंद विज : अगर उन्होंने यह कहा कि उधर बैठने वालों ने बात पहले शुरू क्यों की तो उसमे हम भी आ जाते है। क्या नंगे बदन पर खद्दर पहनने से ही बदन ढका जा सकता है ?

गृह मंत्री (श्री के.एल. पोसवाल) : नही जो सूट और टाई से भी ढका जा सकता हैं.....

महन्त गंगा सागर : स्पीकर साहब, मेरी आपसे रिक्वैस्ट यह है कि अगर कोई ऐसे–वैसे अलुाज कह भी दिये है, तो उनको कार्यवाही से निकाल दिया जाए और सदन की कार्यवाही आगे चलाई जाए।

Mr. Speaker : Very good.

DISCUSSION ON GOVERNER'S ADDRESS (RESUMPTION)

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, पहले कुछ क्रिटिसिज्म किया गया था। मैंने उसमें कोई भी गलत बात नही कही हैं। हर मैम्बर का यह हक हे कि वह किसी भी मिनिस्टर या किसी भी मैम्बर के काम पर कमैन्ट कर सकता है अगर कोई ऐसी बात होगी तो मैं अपना पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन देना चाहूंगा ओर उसके लिये मैं बाद में टाईम ले लूंगा। स्पीकर साहब, यूनिवर्सिटीज की जो हालत है, वह भी ठीक नही हैं हम यदि यह देखकर नही चलते कि जिस आदमी को वहां लगाया जा रहा है, उसको तजरूबा भी है या नही, तो यह एक बुरी बात होगी। कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी के अन्दर ऐसा ही हुआ है। मुझे खदशा है कि हिसार यूनिवर्सिटी के अन्दर भी कही ऐसा न हो जाये। इस किस्म की बातें नही होनी चाहिए इसी में हमारी स्टेट की भलाई है। जहां तक इलैक्ट्रिसिटी का ताल्लुक है, यह कहते है कि हमने हरियाणा के गांव–गांव में बिजली दे दी है....

श्री बंसी लाल : आन ए प्वायन्ट आफ आर्डर,सर। आनरेबल मैम्बर की कल की स्पीच आप पढ़े, उसमें यह बिजली पर बोल चुके है।

He is should not be allowed to repeat anything. Repetition is not allowed.

चौधरी जयसिंह राठी : नही जी। मैंने तो चंडीगढ़ कं अलावा कुछ कहा ही नही। यदि कहीं कोई रैफरैन्स आ जाये तो

इस बात की पाबन्दी थोड़े ही है कि अगर हमारे पास उस सब्जैक्ट पर नई बात हो तो वह भी न बता सके। तो मैं अर्ज कर रहा था कि जहां तक इलैक्ट्रिसिटी देने का ताल्लुक है, मैंने एक बात कहनी थी कि बिजली का मैटीरियल जो हमने लिया, वह हमें ठीक नही मिला। उसका सबूत मेरे पास ह। फरीदाबाद में जयहिन्द प्राइवेट लिमिटिड कम्पनी है जो कि बिजली के पोल बनाती है। उसके पाल दूसरी स्टेटों से भी रिजैक्ट हुए है। वही घटिया पोल इन्होंनें खरीदे है।

Shri Bansi Lal : Agan on a Point of Order, Sir.

पोल्ज के बारे में यही बात ये ऐप्रोप्रिएशन बिल के ऊपर कह चुके है और मैं चाहता हूं कि the hon. Member should not be allowed to waste the time of the House. He has repeated it twice and he is saying it now for the third time.

Mr. Speaker : I am finding out whether he spoke on it earlier.

श्रीमती चन्द्रावती : आन एक प्वायंट आफ इन्फर्मेशन, सर। अभी मुख्य मंत्री जी ने कहा कि ऐप्रोप्रिएशन बिल के ऊपर ये बिजली की बात कह चुके है, मुझे तो पता नही ऐप्रोप्रिएशन बिल यहां आया भी है या नही। मेरे ख्याल से वह तो अभी इन्ट्रोड्यूस ही नही हुआं मैं यह सुचना चाहती हूं कि आया वह यहां इन्ट्रोड्यूस भी हुआ है या नही यह मेरी ऐबसैंस में ही पास हो गया है ?

श्री अध्यक्ष : उनका मतलब सप्लीमैंट्री ऐस्टिमेटस से था।

चौधरी जयसिंह राठी : मै चैलेंज कर रहा हूं कि मैने जय हिन्द कम्पनी के बारे पहले कुछ नही कहा है। I have not said about it earlier.

Mr. Speaker : You can say something else. In the meantime, we can check it.

चौधरी जयसिंह राठी : यह पोल वाली बात का जिक्र करूं या न करूं।

Mr. Speaker : If you have not said earlier.

चौधरी जयसिंह राठी : मैं कह रहा था कि जय हिन्द प्राईवेट लि. कम्पनी से हमारी सरकार ने इलेक्ट्राफाई करने के लिए वे पोल लिए जिनको कि दूसरी स्टेटों ने घटियां पोल बताया हैं होता यह है कि यदि सरकार किसी फर्म से माल खरीदती है तो वह फर्म उस माल को भेजती है लेकिन हमारी सरकार इस फर्म पर इतनी मेहरबान हुई कि खुद ही उसे कैरी करके ले आई। हरियाणा को कितना नुकसान हुआ होगा इस बात का आप अन्दाजा लगा सकते है।

Mr. Speaker : You one minute more please.

चौधरी जयसिंह राठी : मेरा तो सारा टाईम बाकी रह रहा है। में तो अभी पांच मिनट भी नही बोला। स्पीकर महोदय,

एक सवाल पूछा गया था कि मिनिस्टर्ज जो पैसा लेते है वह कहां जाता है ? उसके जवाब में कहा गया है कि मिनिस्टर्ज होने की बात नही होती। जो जवाब हदया यगा है वह मैं पढ़कर सुनाता हूं–

"I am directed to inform you that the question cited above as subject has, on re-consideration, been dis-allowed by the hon. Speaker on the ground that the money garlands etc. are presented to the Ministes in their personal capicaity or as Members of a Political Party and not as Minister. as per information received from the Government."

तो जिन मिनिस्टरों को पैसा मिलता है चाहे वह माला के रूप मे मिले या डोनेशन के रूिप मे, उसको ये पार्टी मे जमा करवाएं और अगर नही करवाते तो इन्कमटैक्स वालों को भेज देंगे। स्पीकर साहब, वे टैक्स से नही बच सकते। सरदार प्रताप सिंह और उसके लड़के नही बच सके थे। तीस लाख टैक्स का देना पड़ा था। मैं तो कहता हूं कि इन को भी टैक्स रिटर्न तैयार कर लेनी चाहिये।

श्री बनारसी दास गुप्ता : आपको क्यों फिक्र हुई ?

चौधरी जयसिंह राठी : मैं कह रहा था कि यह तो ऐडमिटिड फैक्ट है कि वे जाति तौर पर पैसा लेते है। इस संबंध में गवर्नमैन्ट ने नोटिफिकेशन निकाला हुआ हैं कि जो डोनर है या जो पैसा लेने वाला हे वह बताए कि पैसा क्यो दिया जा रहा है, किस काम के लिये दिया जा रहा है। इके लिये हमारे पास रूल्ज

हैं आज ही मैं सवेरे प्रदीप अखबर पढ़ रहा था जिस में लिखा था कि * * * * *

श्री बंसी लाल : आन ए प्वायंट, आफ आर्डर, सर। आनरेबल मैम्बर ने कहा कि मैंने इस किस्म की बात की है। चीफ मिनिस्टर ने कभी न ऐसी बात कही और न कही जा सकती । किसी अखबर की बात कर यह अपना करेक्टर रिफलैट कर रहे हैं हमारी पार्टी को किसी आदमी से क्या मिलता है। इसके बारे में मेरा निवेदन है कि the conduct of our Party cannot be discussed in this House. The hon. Member should be stopped from wasted the time of this August House and these remarks should be expunged. He has no buseness to quote an irresponsible paper like this.....

Mr. Speaker : There is a rule in our Rules of Procedure that newspapers cannot be quoted. Therefore. the remarks pertaining to that would be expunged.

Chaudhri Jai Singh Rathi : I withdraw those remarks. (व्यवधान) स्पीकर साहब मुझे एक शेर याद आया है जो इस प्रकार है :–

ऐ निकहते बादे बहारी तु राह लग अपनी,

तुझे अठखेलियां सूझीं यहां बेजार बैठे है।

(व्यवधान)

स्पीकर साहब, मैने बड़ी जिम्मेदारी के साथ शब्द वापिस ले लिए है।

Shri Bansi Lal : He should not be allowed to make such irresponsible speeches.....

चौधरी जयसिंह राठी : स्पीकर साहब, चूंकि अब टाईम नही रहा इसलिए मैं खत्म करते हुए यह कहूंगा कि गवर्नर साहब ने इस एड्रैस मे ंहरियाणा की भालाई की कोई बात नही की।

Mr. Speaker : He had not mentioned Jai Hind Co. yesterday. I have verified this from the proceedings. This is a new thing.

PERSONAL EXPLANATIONS

By—

(i) Home Minister (Shri K.L. Poswal).

(ii) Chaudhri Jai Singh Rathi.

गृह मंत्री (श्री के.एल.पोसवाल) : स्पीकर साहब, कल राठी साहब यह कह रहे थे कि पोसवाल साहब ने ग्रिवैंसिज कमेटी में यह किया। मैं उनसे यह दरख्वास्त कयंगा कि वह सफेद झुठ न बोला करे। मैं अर्ज कंरू कि करनाल मे ग्रिवैंसिज मैटी की मीटिंग में जिसको मैं प्रिजाइड करता हूं भाई साहब मुश्किल से दो बार तशरीफ लाए और आते ही पहली बात जो कि वह यह थी आफिशियल्ज नीचे बैठेंगे और हम ऊपर बैंठेंगे। मैंने कहा कि आफिशियल्ज हमारे डवैल्पमैंट के काम में मदद करने के लिए आते है इसलिए हम सब साि बैठ कर बात करें तो ठीक रहेगा। दाआसल इनका मकसद यह होता है कि आफिशियल्ज पर राब डाला जाए। इन्होने जिस मर्डर केस का जिक्र किया है वह असल

में सूसाइड का केस है। हमने अपने सारे सोर्सिज से चैक कराया है और उसके बालदेन से भी पता किया है और उसके बारे में यही पता लगा है कि वह सूसाइड का केस है।

(व्यवधान)

चौधरी जयसिंह राठी : आन ए प्वाएंट आफ आर्डर, सर। में बहुत शांति से बैठा हुआ था लेकिन चीफ मिनिस्टर साहब फिर छेड़ रहे है।

श्री बंसी लाल : मैं तो यही कह रहा हूं कि हमने चार बार अपने सार्सिज से इन्क्वायरी करवा ली है अगर यह ब्यान हल्फी दे तो हम फिर इन्क्वायरी करवा लेते है।

चौधरी जयसिंह राठी : आप भी ब्यान दे दे।

श्री बंसी लाल : हम क्यो ब्यान हल्फी दें ? We are the Government and we would conduct an inpartial enquiry. If he says that it is a 'murder' then he should file an affidavit.

चौधरी जयसिंह राठी : आप ब्यान हल्फी नही देते तो हम भी क्यों दे।

Mr. Speaker : We have luckily come to reasonable standards. लेकिन फर छोटी–छोटी बातें शुरू हो जाती है।

चौधरी जयसिंह राठी : हमारे से शुरू नही होती है, उधर से शुरू की जाती है।

Mr. Speaker : let us forget about it. We should keep our standard absolutely high. A statement was being made by an hon. Minister. Let us listen him.

महन्त गंगा सागर : अध्यक्ष महोदय, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि लीडर आफ दी हाउस ने हल्फिसा बयान के बारे में जिक्र किया है, उसके बारे में मेरा ख्याल है कि हम जो कुछ सदन के अन्दर कहते है वह सब हल्फ के साथ कहते है। मेरा कहना सिर्फ यह है कि हम ठीक ढंग से और पेशैन्स से काम को चालू रखें और नुक्ताचीनी तथा दूसरी बातें जो ठीक नही है, उन को खत्म करे।

Mr. Speaker : Thank you !

श्री के.एल. पोसवाल : स्पीकर साहब, मैं मर्डर्ज के बारे में अर्ज कर रहा था कि जहां–जहां भी थोड़े बहुत कतल हुए हे वह आम तौर पर जमीन जायदाद के झगड़ों की वजह से हुए है। हमने उनकी पूरी पडक्ताल करवाई है। अगर कोई ऐसी बात हो कि किसी इस किस्म के जुर्म में किसी मिनिस्टर के रिश्तेदार का हाथ हो तो आप हमारे नोटिस मे ला सकते है, हम उसकी पड़ताल करवाएंगे क्योंकि कानून सबके लिए एकसा है, हम उनके खिलाफ ऐक्शन लेंगे। हमारी पुलिस बहुत कम्पीटैंट है और बड़ा अच्छा काम कर रही है क्योकि हमने उनको पूरी फैसिलिटीज दे रखी है अगर किसी ने जुर्म किया हो तो वह उसका लिहाज नही करती चाहे वह कोई भी हो। तो मै स्पीकर साहब, मैंबर साहिबान

को यकीन दिलाना चाहता हूं कि हमारी पुलिस ला एण्ड आर्डर के मामले मे किसी की तरफदारी नही करती।

चौधरी जयसिंह राठी : आन एक प्वायंट आफ पर्सनल ऐक्सप्लेनेशन,सरं आनरेबल होम मिनिस्टर साहब ने अभी कहा था कि मैंने हाउस में उनको पोसवाल साहब कह कर पुकारा है। स्पीकर साहब अगर यह शब्द आन–पार्लियामैंट्री है या अदब से बाहर है तो वह बता दे,मैं आइंदा उनको ऐसा कह कर नही पुकारूंगा।

श्री के.एल. पोसवाल : मैंने तो इसलिए कहा था कि आपने जाति बात का जिक्र किया था।

चौधरी जयसिंह राठी : वहां पर मैंने पोसवाल साहब आपसे बात की थी इसीलिए मैंने यहां पर जिक्र किया था। इसके साथ–साथ होम मिनिस्टर साहब ने यह भी कहा था कि मैं अफसरान पर रौब डालना चाहता हूं। मैं स्पीकर साहब यहां पर इस बात का एलान करता हूं कि अगर जिले के एक भी अफसर से यह कहलवा दे कि मैंने किसी अफसर के पास जाकर उनको कोई बात कही है तो इनकी बात मैं सच मान जाऊंगा। इसलिए उनका यह जो इल्जाम है कि मैंने अफसरों पर रौब डालेने के लिए इनको यह कहा था कि उनको नीचे बैठाया जाए, यह गलत है और इनकी अपनी तरु से बनाई हुई बात है। वहां पर तो हॉल है और जिस किसी भी तरु की सीटों पर जो बैठना चाहे, बैठ सकता है।

Mr. Speaker : I am glad that we have now come to a reasonable situation. Let us forget about petty things. Next speaker please.

चौधरी रणबीर सिंह : अध्यक्ष महोदय, हामरे राज्यपाल ने ..... (विघ्न)

चौधरी बनवारी राम : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर स्पीकर साहब, हाउस के अन्दर काफी मैंबर है इसलिए सब का टाईम बांध दिया जाए ताकि सभी को 'बार' लेने का मौका मिल सके। चौधरी रणबीर सिंह जी ने तो ठेका ले रखा है हाउस का, हम ऐसी बात नही चलने देंगे।

श्री अध्यक्ष : चौधरी बनवारी राम जी, यह आप का प्वायंट आफ आर्डर नही है, यह तो आप सजैशन दे रहे है।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहब, अभी मानयोग सदस्य ने ठेके की बात कही है, ठेका कभी एक पार्टी से नही होता। (विघ्न)

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, बिजनैस ऐडवाइजरी कमेटी की मीटिंग अभी होने वाली हे और आप उसमें स्पैशल इन्वाईटी है, इस लिए आप अभी बोलना चाहेंगे या कि बाद मे बोलना पंसद करेंगे।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहब, अगर मीटिंग अभी शुरू होनी है तो मै उसके बाद में बोल लूंगा।

श्रीमती चन्द्रावती : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। स्पीकर साहब, यहां पर यह कहा गया था कि अखबारो को कोट नही किया जा सकतां जहां तक मेरा ख्याल हे हम अखबारों को पढ़ नही ससकते लेकिन उनकी रफ्रैंस जरूर दे सकते है। इस लिए मैं आप से निवेदन करूंगी कि आप हमें इस बारे में ऐन्लाइटन करें कि क्या कोई मैम्बर अखबार में से रेफ्रैंस दे सकता है कि नहीं ?

Mr. Speaker : I think, you are right. Now I remember that questions, which are based on the information given in the News papers, cannot be asked. I have alsoseen in Lok Sabha, news papers being quoted. So, I will give ny ruling on this sometime later.

चौधरी रणबीर सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं बोल तो नही रहा लेकिन एक मानयोग सदस्य ने एक ऐसी बात कही जो कि चेयर पर भी रिफलैक्ट करती है। उन्होंने कहा था कि चौधरी रणबीर सिंह ने ठेका ले रखा है। तो ठेका एक तरु से नही होता, ठेका हमेशा दो पार्टियों के बीच में होता है। एक पार्टी देने वाली होती है और एक लेने वाली। इसका मतलब हैं कि उन्होने आपको भी बीच मे इनवालव किया है। तो मैं समझता हूं कि ठेके वाली बात प्रोसीडिंग्ज में से ऐक्सपंज की जानी चाहिए।

Mr. Speaker : Khan Sahib, you wanted to speak. You may doso now.

DISCUSSION ON GOVERNOR'S ADDRESS (Resumption)

चौधरी अब्दुल रज्जाक खाँ (फिरोजपुर झिरका) : जनाब स्पीकर साहब, कल से गवर्नर साहब के ऐड्रैस पर बहस चल नही है। (**इस समय सभापतियों की यूची में से एक सदस्य प्रिंसिपल ईश्वर सिंह पदासीन हुए**)। इस के बारे में बहुत से मैम्बर साहिबान ने मुझ से पहले अपने ऐड्रैस मे चण्डीगढ़ और फाजिल्का के बारे में जिक्र किया है। पंजाब की तरफ से जो उस मामले को खोला गया व ह एक अफसोसनाक बात है और हम समझतेै है कि वह हरियाणा के बाशिंदों को फिर से चैलेंज करना चाहते हैं चेयरमैन साहब, हरियाणा के बाशिंदे उस सर जमीन के रहने वाले है जहां से हर विदेशी हमलावर को रोका गया और अपनी सर जमीन की चप्पे चप्पे के लिए कुर्बानी देना हरियाणा के बाशिंदों का काम रहा है और है। हम मकंजी सरकार के उस फैसले का एहतराम करते है और मैं अपने पंजाब के भाईयों से अपील करूंगा कि वह भी उस का एहतराम करें ताकि फिजा ठीक बनी रहे। हम समझते है कि हमारा दो भाईयों का आपस में बंटवारा हुआ है इसलिए इस में झगड़ा नही करना चाहिए ताकि हमारे बाहमी ताल्लुकात बने रहे। मैं उम्मीद करूंगा कि हमारी तमाम विधान सभा फिर से इस की ताईद करेगी और पंजाब के भाई भी सैंटर के किए हुए फैसले का एहतराम करेगे।

इसके बाद टैक्सों के बारे मे ंगवर्नर साहब ने सरकार की पालिसी की वजाहत की है। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार ने हरियाणा के बाशिंदों पर कोई नया टैक्स नही लगाया।

यह खुशी की बात है। लेकिन चेयरमैन साहब, जब हम तमाम तरक्कियात के प्रोग्रामों में बढ़ कर हर पहलू में काम कर रहे है, सब प्रोग्रामों को एक वक्त चलाया हुआ ळै, पीने का पानी देना है, सड़कों को बनाना है, लोगों की सेहत के लिए हस्पताल खोलने है, इंडस्ट्री लगाने के प्रोग्राम है, तो तो इन सब चीजों के लिए पैसे की जरूरत है। इसलिए मैं तजवीज कयंगा कि टैक्स देने की हैसियत में हैं लेकिनवे बचे हुए है। हमारे सूबे में बहुत सी ऐसी प्राईवेट टैक्सियां चलती है जो कि सरकार को टैक्स नही देती और उनका क्याम हर शहर और जिला हैडक्वार्टर में मौजूद है। वह टैक्स की जद से बची हुई है। इस लिए मैं अपनी सरकार से गुजारिश करूंगा कि उनकी सखतरीन पड़ताल होनी चाहिए और जो हजारों टैक्सियां नाजायज चल रही है उनकी ग्रिफ्त होनी चाहिए। उन से जो टैक्स वसूल होगा उस से तरक्कियात की स्कीमों को तेजी के साथ चलाने मे मदद मिलेगी। इस बारे में हमारे पुलिस डिपार्टमैंट और दूसरे मुताल्लिका डिपार्टमैंट को चौकस होकर काम करना चाहिये और ऐसे लोगों को जो सरकार और लोगों की ओखों में धूल झोंकते है टैक्स की ग्रिफ्त मे लेना चाहिये।

तीसरी बात मैं जरई तरक्कियाती कामों के बारे कहना चाहता हूं। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि जरायत में बहुत तरक्की हुई है लेकिन इस में एक बात यह हो रही है कि जो किसान इतनी मेहनत मुशक्कत करके अनाज पैदा करता है

उसके साथ मंडी में बड़ा धोखा किया जाता है और उसकी खून पसीने की कमाई को लूटा जाता है। इस बारे में सख्त इकदमात उठाये जाने चाहिये। किसान धूप सर्दी में सुबह चार बजे से शाम के नौ बजे तक खेत मे काम करता है मगर जब वह अपना माल मंडी मे लेकर आता है तो मंडी में जो सरकारी मशीनरी उसके माल की खरीद करती हैं वह उससे धोखा करती है। वह लोग किसान को डराने के लिये और उसके माल को कंडैम करने के लिये कह देते है कि इसमें जौ मिले हुये है, इसमे रेत कंकर मिले हुए है, इसका दाना छोटा है और ऐसी वैसी बातें कह कर उसके माल की कम कीमत देने की कोशिश करते है। पिछले पुराने रिकोर्ड से साफ जाहिर हो सकता है कि गुड़गांव, होडल और पलवल की मंडियों में इन बहानों के कारण किसानों को दो–दो दिन तक माल वहां रखना पड़ा और जब उन्होने समझ लिया कि उनका माल अफसरों की मर्जी के मुताबिक बिकेगा तब वे अपना माल मकामी आढ़तियों को बेच गये। फिर उनका वही माल सरकारी मुलाजिमों ने उन से खरीद दिया ओर बीच का नफा आढ़तियों ने उठाया लेकिन किसान को कम पैसे मिले। मैं उम्मीद करता हूं कि वजीर साहब इस बारे मे ंसख्त कार्यवाही करंगे और जो किसान के साथ धोखा हो रहा है उससे उसे निजात दिलायेंगे।

सनअती तरक्की के बारे मे भी कहा गया है। यह वाकई बड़ी तारीफ की बात है कि सनअती तौर पर हरियाणा ने काफी

तरक्की की है लेकिन इस बारे में मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि जितने यह सनअती सैटर है, मर्कज है वे सारे फरीदाबाद, बल्लभगढ़ और सोनीपत मे ंहै और उन इलाकों ने सनअती कामों में हिस्सा लिया हैं सरकार को चाहिये कि जितने बैकवर्ड एरियाज है उनमे ंसनअतें जारी की जोय और पब्लिक सैक्टर मे ंचालू की जाये ताकि उन बेरोजगार लोगों को भी रोजगार मिल सके। वहां परबहुत बेरोजगारी है और वह तभी दूर हो सकती है अगर वहां पर सनअतें जारी की जाएंगी। मुझे उम्मीद है कि बजीरे सनअत इस तरफ ध्यान देंगे।

मै ंला एंड आर्डर के बारे में भी कुछ अर्ज कहना चाहता हूं। इस बारे में हम सभी पहलुओं पर तो नही कह सकते लेकिन हमारी स्टेट मे बाकी तमाम मुल्क से ला एंड आर्डर ठीक नही जितना कि होना चाहिये। इस बारे में मैं कहना चाहता हूं कि इस के लिए अकेली सरकार ही जिम्मेदार नही है। इसके लिये अवास की काफी जिम्मेदारी है और खास तौर पर अखबारों की भारी जिम्मेदारी है। मुल्क मैं अगर कही चोरी हो जाये, डाका पड़ जाये तो सारे अखबारात उस चोरी या डाका के बारे में पूरी तफसील के साथ ब्यान करते है कि कैसे चोरी हुई कैसे डाका पड़ा कैसे अन्दर दाखल हुये और डाकू कैसे बाहर आये। इस तरह तफसील से लिखने से तो मै यही समझता हूं कि सिवाये इसके कि लोगों को चोरी और डाके का तरीका बताया जाये कि कैसे डालना है और कोई मकसद हल नही होता। मुझे समझ नहीं आता कि ऐसी बातों

को इतनी तफसील से लिखने की क्या जरूरत है ? फिर ये अखबार लड़कियों के अगवा करने के बारे मे, होटलों में बदमजगी के मनाजर ओर रिश्वतसतानी के तरीकाकारों के बारे में ब्यान करने में पेश–पेश रहते है। मैं नही समझता कि ऐसा लिख कर अखबार कौन सा मकसद हासिल करते है। इसी लिए मैं कहता हूं कि ला एंड आर्डर कायम करने में अकेली सरकार ही जिम्मेदार नही है बल्कि इसमे अवाम की और दूसरे सारे लोगों की जिम्मेदारी है और सब को अपना अपना फर्ज पूरा करना चाहिये। आज मुल्क में हरेक आदमी ने, चाहे वह लेबर क्लास का है, फैक्टरी में काम करने वाला है, सरकारी मुलाजमत मे है या दूसरे अदारो में काम करता है, अपने हकूक को पहचान लिया है। सब लोग अपने हकूक के बारे में मुतहद होकर लेकिन उन्होने अपने फरायज को नही पहचाना है। मुल्क में कारखानों को जला देते है। सरकारी दफतरों और डाकखानों में आग लगाते है, बैंकों और कारखानों का काम मुअत्तल कर देते है। हमें अपने फरायज को भी पहचानना चाहिये कि हमारा कहां कि जगह क्या फज्र को भी पहचानेंगे तभी यह ला एंड आर्डर के मसले हल होंगे, आप तालीमी माहौल ही देख ले कैसे हो रहा है। हमारे टीचर लोग इतना जानते है कि छः घंटे स्कूल में पूरे करने है लेकिन यह नही जानते है कि वह जिनके लिये रखे गये है वह कौम का सरमाया है ओर उन्होने आगे चलकर मुल्क को चलाना हैं असल में टीचर का काम बच्चों में मुल्क के लिये जान देने का जजबा भरने ओर दूसरों की खिदमत औरमुल्क में अपनो–अमान कायम करने के बारे

मे ंतालीम देने का है लेकिन वे तो स्कूल में छः घंटे पूरा करना ही अपना काम समझते है। फिर आप बिजनेसमैंन का हाल देख ले कि वे क्या करते है ? वे यही जानते है कि अपने माल का कैसे ज्यादा से ज्यादा नफा हो ओर किस तरह घटिया माल को असली लेबल लगा कर बेचा जाये। वे यह नही जानते कि उस माल को खरीदने वाले उनके भाई है। और अगर उन्हे धोखे का पता लग गया तो वे कितनी बद्दुआये ंदेंगे। इसी तरह सरकारी अदारों में बैठे लोग, लोगों के साथ अच्छी तरह पेश नही आते और वह सलूक नही करते जो जमहूरियत मं उनको लोगों के साथ उन्हे अपना भाई समझ कर करना चाहिये। अवाम परेशान हाल है और सरकारी दफतरों के सामने भीड़ लगाये खड़े रहते है। एक दरख्वास्त के लिये कई–कई चक्कर लगाते है और एक मेज से दूसरे मेज तक कागज जाने मे महीनों लग जाते है लेकिन कोई नही देखता कि आखिर वे लोग उनके अपने मुल्क के है अपने भाई–बन्द है। मेरे कहने का मतलब यह है कि जब तक हम सब अपने फर्ज को फर्ज नही समझेंगे तब तक सरकारी निजाम ठीक तरह से नी चलेगा और देश की बेहतरी नही होगी। हमारे इलाके में एक खास बात हो रही है और मैंने उसके बारे मे ंचीफ मिनिस्टर साहब से जिक्र भी किया था ओर वह बात नोट भी करवा दी थी लेकिन अभी तक उसका खास असर नही हुआ है, और वह मर्ज ज्यों मौजूद हैं हमारे इलाके में लोग गरीब है, बारानी इलाका है और अगर बारिश हो जाती है तो कुछ फसल हो जाती है। इन हालात में वहां लोगों को तकावियां लेनी पड़ती है

ओर सरकार का भी फर्ज है कि वे दे लेकिन मकामी अफसर आजकल इस बारे में ब्लैक मेलिंग कर रहे है और जिसे ब्यान करते मुझे शर्म आती है। वह औप्रेशन कराने वालों को ही तकाबी देते है या जो तकावी लेने जाता है उसे कहते है कि पहले औप्रेशन कराओ। मैं कहता हूं कि तकावी मदद के लिये है और औप्रेशन समझ की बात है। अगर किसी का परिवार बड़ा है और आमदमी कम है जिससे गुजारा नही होता तो यह समझाने की बात है ताकि उन पर जबर किया जाये। मेरे इलाके मे तीर चार गांव ऐसे है जिन के जमीदारों को तकावी इसलिए दी गई है कि उन्होंने औप्रेशन करवा दिया। औप्रेशन का मतलब यह नही कि 80–80 साल के बूढ़ों को जिन के औलाद हुए बीस बीस साल हो चुकके है औरबीस साल से औलाद होना बन्द है उन के साि इस किस्म की ज्यादती की जाए। यह अवाम के साथ धोखा है। जिन अफसरान ने फर्जी फिग्र्ज पेश की है कि हमने इतने फीसदी अवाम औप्रेशन किया है उन के खिलाफ सख्त कारवाई की जानी चाहिए। 80–80 साल की उम्र सालो का औप्रेशन करने का क्या फायदा है ? फर्जी फिग्र्ज सरकार के पास पेश करना अवाम के साथ धोखा है और अपने इनामात को महफूस रखने का तकाजा है। मैंने दो तीर आदमियों के नाम बताए है जिनके साथ इस किस्म की ज्यादती की गई है। एक आदमी है जिस की उम्र 50 साल की है और तकरीबन 25 साल से रंडवा है, उसका औप्रेशन करने का क्या मतलब है ? झुक कर चलने वाले बूढ़ों का औप्रेशन करने का मतलब महय यही है कि कागजात मे शो करें कि हमने फैमिली

प्लैनिंग में इतनी कामयाबी हासिल की है और इस काम के लिए उन्हे तकावी दी जाती है। क्योंकि उनके पास पैसे नही होते और पेसे की जरूरत होती है इसलिए वे औप्रेशन करवा लेते है। मैं पूछता हूं कि लाठियां टेक कर चलने वाले बूढ़ों का औप्रेशन करने से क्या फायदा है ? मैं चीफ मिनिस्टर साहब से अर्ज करूंगा कि फर्जी फिग्र्ज पेश करने वाले अफसरान के खिलाफ कार्यवाही की जाए।

चेयरमैन साहब, पीने के पानी को हासिल करने का निशाना सरकार का काबिले तारिफ है लेकिन इस में थोड़ी सी कमी रह गई है। कुछ ऐसे गांव है जहां पानी अब तक भी जोहड़ों से पीया जाता है। एक तरफ पशुओं के पानी का घाट है और दूसरी तरफ इन्सानों के पीने का पानी है। कई जगह गांवों के अन्दर या बाहर इतना खारा पानी है अगर पी लें तो आटें मे नमक डालने की जरूरत नही। कहीं कहीं इतना खारा है कि अगर पी ले तो जबान उखड़ जाएगी। मैं सरकार से अर्ज करूंगा कि ऐसे गांवों को इस काम मे तरजीह दे जहां पीने का पानी कतई नही है। जहां इंसान और हैवान एक ही जगह पानी पीते है उन गांवों को तरजीह दी जाए। तीन चार गांव जिन में बहुत तकलीफ है जैसे सिगार, मुहाना, कुछ गांवो के नाम मुझे याद नही, इन में पानी जरूर मूहैया हो।

चेयरमैन साहब, बेरोजगारों का जिक्र किया गया है। बेरोजगारी के बारे में सरकार अपनी तरफ से बन्दोबस्त कर रही है

और उसकी जिम्मेदारी भी हे ऐसा करने की। मैंने गुड़गांव के आफिसरों से बातचीत की हैं उन्होंने मुझे नई बात बताई कि यहां एम्पलायमेंट एक्चेंजज में दिल्ली के लोग टैम्पोरेरी ऐड्रैस देकर अपना नाम दर्ज करवा लेते है। यू.पी. के लोग भी अपने रैलेटिवज के नाम से टैम्पोरेरी ऐड्रैस देकर नाम दर्ज करवा लेते है। खास तौर पर अम्बाला, गुड़गांव और सोनीपत तीन चार जगहों पर दूसरी स्टेटों के लोग नाम दर्ज करवा लेते है और हरियाणा के लोग जो नाम दर्ज नही करवाते, पीछे रह जाते है और नौकरियों हांसिसल नही कर पाते। यही वजह है हक रोजगार के निशाने पूरे नही हो रहे है। में सरकार से अर्ज करूंगा कि टैम्पोरेरी ऐड्रैस की बजाए परमानेंट ऐड्रैस रोजगार दफतर में दर्ज किया जाए ताकि रोजगार का निशाना आसानी से पूरा हो सके और हरियाणा के लोगों को रोजगार मिल सके।

एक बात रिश्वतस्तानी के बारे में अर्ज करना चाहता हूं। रिश्वत को खत्म करने का प्रोग्राम मर्कजी सरकार का रहा है और हर स्टेट की सरकार और अवास चाहता है कि यह खत्म हो लेकिन यह बन्द नही होती बल्कि बढ़ रही है। रिश्वतखोरी के बड़ने की जिम्मदारी एक आदमी की नही बल्कि हम सब की जिम्मेदारी है। मुल्क के हर बाशिन्दे की जिम्मेदारी है। रिश्वत लेना बड़ी शर्म की बात है। जो रिश्वत लेता है उसे सोचना चाहिए कि किसान उस का भाई है, दुकानदार उसका भाई है और मूलाजम उसका भाई हैं। इनकी आत्मा क्यों इस बात को नही कि ये सब

अपने भाई है जिन से ये रिश्वत लेते है। अगर रिश्वत लेने वाले को कोई परेशानी आ जाती है और उस परेशानी को दूर करने के लिए उसे भी रिश्वत देनी पड़े तो मेरे ख्याल में वह जरूर महसूस करेगा कि रिश्वत लेना बुरी चीज ह। इसको दूर करने के लिए जहां तालीम में सुधार जरूरी है वहां समाज के दखल की भी आवश्यकता है। आज समाज में कोई ऐसी और्गेनाईजेशन नही रही जो मुल्क को, समाज को बेहतर बनाये, लोगों का मौरल ऊंचा करे। कोई आदमी हर बुरी बात को बुरा कहने के लिए हिम्मत नी रखता। इसलिए हमारी सरकार को इस तरफ नए कदम उठाने चाहिएं और ऐसी और्गेनाईजेशन बनानी चाहिए जो न केवल रिश्वतखोरों के लिए बल्कि दूसरी स्टेटों के लिए भी एक मिसाल कायम हो। सरकार को इस तरफ सख्ती से फैसला करना चाहिए ताकि रिश्वतखोरी खत्म हो सके। (घंटी)

इन लफ्जों के साथ मैं गवर्नर साहब का शुक्र गुजार हूं, जिन्होंने इतना बेहतरीन ऐड्रैस पेश किया है। जो भाई हम में से जजबात में आकर एक दूसरे की जातियात पर हमला करते है, उन्हे किसी एक खामी को लेकर सारे ऐड्रैस को कंडैम नही करना चाहिए। उन्हे सारे हालात को मद्देनजर रख कर गौर करना चाहिए क्योंकि यह बहुत बड़ा लम्बा सिलसिला है खामियों के साथ अच्छाईयों का भी हवाला दो ताकि उन का ब्यान रंगीन हो सके अच्छे और बूरे दोनों पहलू बयान करने चाहिएं और खामियों को

दूर करने के लिए सुझाव दें। इन लफ्जों के साथ में आपका शुक्रियां अदा करता हूं।

सरदार तेजा सिंह (डबवाली एम.सी.) : चेयरमैन साहब, मै आप दा शुक्रगुजार हां जो आप नें मैंनु गवर्नमैंट दे ऐड्रैस ते बोलण दा मौका दिता है।

Mr. Chairman : Either speak in Hindi or English, which are the languages of the House.

सरदार तेजा सिंह : गवर्नर साहब के ऐड्रैस में चण्डीगढ़ , फाजिल्का, हस्पतालों स्कूलों और सड़कों के मुताल्लिक, गरीब और पिछड़ी श्रेणियों के मुताल्लिक बहुत कुछ लिखा हुआ है। चेयरमैन साहब, मै अपने हल्के की एक बात करने लगा हूं। जहां तक ला–एंड–आर्डर का ताल्लुक है, वह वहां बहुत खराब है। मेरे हल्के में दिन दिहाड़े एक कत्ल हुआ है। पिण्ड हस्यू में सरदारा तारा सिंह एडवोकेट के भाई को कत्ल किया गया परन्तु सरकार ने इस कत्ल के बारे में कोई बात नही सुनी और उन दोषियों को छोड़ दिया गया। मैं इस बारे में बपने मोहतरिम बुजुर्ग वजीर साहब जो इस समय हाउस में बैठे है से प्रार्थना करूंगा कि वे मेरी बात होम मिनिस्टर साहब और चीफ मिनिस्टर साहब को बताएं कि इतना बड़ा अन्याय हुआ मगर उसकी सुनवाई नही हुई। वह कत्ल 9–10–70 को हुआ था। वह आदमी जिका कत्ल हुआ उपने 'माल' को पानी पिलाने गया हुआ था। दो दोषियों ने उसके नाक के ऊपर गौंदाला मार कर उसे लोगों के

सामने पानी में फैंका और पानी में डूबो डूबो कर मार दिया और कानून को पैरों के नीचे कुचल डाला। गवर्नर साहब के ऐड्रैस मे कहा गया है कि ला एंड आर्डर बहुत अच्छा है मगर यह बात ठीक नही। हल्का रोड़ी में एक गरीब हरिजन को दोषियों ने गला घोंट कर मार दिया। हमारी सरकार ने उस गरीब की रपट भी लिखने नहीं दी। वे लोग मेरे पास आए और कहा कि हमारे लड़के को दोषियों ने गला घोंट कर मार दिया हैं मैने उनको कहा कि हमारे चीफ मिनिस्टर साहब मेरे हल्के में आए हुए है उनके पास जाकर पुकार करो। तो इस तरह से चेयरमैन साहब आज यहां गरीबों को मारा जा रहा है। क्यों मारा जा रहा है ? इसका कारण मैं इस सूबे के अन्दर कम गिनती वालो को खस करके पंजाबियों और सिक्खों को दबाने की नीति समझता हूं। मेरे इलाके में ये दो कत्ल हुए और किसी ने इनकी सुनवाई नही की। इलाके में हा–हाकार मच रही है। मिनिस्टर साहब इन बातों को नोट करे। मैं बड़े प्यार के साथ किसी जजबात में न आकर बातें कहूंगा। ये सच्ची बाते है। सरकार को इन दो मडरों के बारे में इन्क्वायरी करनी चाहिए।

हमारे चीफ मिनिस्टर साहब मेरे हल्के में गए और इन्होंने वहां पंजाबियों का बड़ा ढिंढोरा पीटा। इन्होंने कहा कि पंजाबियों सुनों हमने होम मिनिस्टर और बड़े अफसर पंजाबी लगा रखे है। मैं तो समझता हूं कि सरकार ने शायद ही अब तक कोई बस कंडक्टर भी पंजाबी रखा हो।

चौधरी दल सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। चेयरमैन साहब, मैं समझता हूं कि शायद कोरम पूरा न हो, आप जरा गौर फरमा लीजिए।

Mr. Chairman : The quorum is complete. It requires tn Members to be present.

सरदार तेजा सिंह : चेयरमैन साहब, हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने तो पंजाबियों का बड़ा ढिंढोरा पीटा मगर मैं समझता हूं कि पंजाबियों को बड़ी नफरत के साथ देखा जा रहा है खास तौर पर सिक्खों को बड़ी नफरत के साथ देखा जा रहा है।

चेयरमैन साहब, इस ऐड्रैस में चण्डीगढ़ और फाजिल्का के बारे में भी गवर्नर साहब ने लिखा है। इसके बारे में मुझे एक लोक गीत याद आ गया है और वह यह है कि :–

'लै जानगे जिन्हांने दाम खर्चे'

चंडीगढ़ जिनका था वे ले गए। हमारे चीु मिनिस्टर साहब ने उसके ऊपर कोई एतराज नही किया। मैं हरियाणा निवासी हूं और हरियाणा का पक्का नागरिक हूं। मैं चाहता हूं कि पंजाब में यदि हरियाणा का कोई हिन्दी बोलता गांव है तो उसे लेने के लिए हमारी सरकार को पूरी जद्दोजहद करनी चाहिए और जो हरियाणा में पंजाबी बोलते इलाके है जैसे हल्का डबवाली, रोड़ी, फतेहाबाद, सब–डिविजन सरसा, गुल्हा पेहवा, अम्बाला,

शाहबाद और मारकंडा, उन्हें पंजाब को दे दिया जाना चाहिए। फाजिल्का के बारे में चीफ मिनिस्टर साहब खुद ही समझ ले कि क्या करना है ? मै तो समझता हूं कि पंजाब वाले उसे दंगे नही क्योंकि हमारे चीफ मिनिस्टर साहब इस केस की पैरवी भी ठीक नही कर पाये, ये इसमें फेल हुए है। संत फतेह सिंह ने अच्छी तरह से केस लड़ा और वे चण्डीगढ़ ले गएं पंजाबी बोलने वाले इलाके भी वे ले जाएंगे क्योकि मुझे पता लगा है कि इन्होंने इनको पंजाब को देने वास्ते अपना फैसला कर लिया है। चेयरमैन साहब, मेरे दोस्त (सरदार प्यारा सिंह) अब आ बैठे है जो कहते है कि हमारे साथ कोई धक्का नही हो रहा परन्तु मै कहता हूं कि मेरे इलाके के साथ खास कर तथा सब डिवीजन सरसा के साथ धक्का हो रहा है। हमारे बड़े लम्बे लम्बे कदों वाले और सियाने एम.एल.ए. यहां बैठे है मगर अफसोस हे कि इनकी कोई सुनवाई नही। यह सब–डिवीजन सरसा के साथ बड़ी बेइंसाफी है। हमारे इलाके का कोई मिनिस्टर नही है अगर वहां का कोइ मिनिस्टर होता हतो हम अपने दुःख उसके पास ही रो लेले। सरदार प्यारा सिंह जी को हमारे चीफ मिनिस्टर साहब ने बड़ी रियायते दे रखी है और उनमे से एक बड़ी रियायत यह है कि इनको कलफ लगाना सिखा दिया है जो हमारे धर्म में अच्छी बात नही मानी जाती। इन्होने कभी नही सोचा कि हरियाणा के अन्दर सरदार प्यारा सिंह जी से कहूंगा कि ये कल्फ लगाना छोड़ें और देखे कि आया हरियाणा में कम गिनती वाले, पंजाबियों और सिक्खों के साथ कोई धक्का तो नही हो रहा, वेइंसाफी तो नही हो रही। मैं तो

समझता हूं कि पंजाबियों और सिक्खों के साथ ये सब बातें हो रही है और किसी भी महममें में उनको नही रखा जा रहा और जो है भी उनकों नफरत की नजर से देखा जा रहा है। चेयरमैन साहब, मैं इतनी ही बात कह करके आपका धन्यवाद करता हूं।

PERSONAL EXPLANATION

BY

Deputy Minister (Sardar Piara Singh)

सरदार प्यारा सिंह (उप–मंत्री परिवहन) : चेयरमैन साहब, मेरे आनरेबल साथी ने बड़ी लगल सी बातें यहां कह दी इसलिए मुझे कुछ कहना जरूरी हो गया है। क्या ही अच्छा होता यदि वे कोई तजवीज पेश करते, कोई ऐसी बातें कहते जिससे कौम का भला हो सके, इलाके का भला हो सके और प्रदेश व देश का भला हो सके। इनकी तो हर बात फजूल और बेमायनी है। मैं तो समझता हूं कि अगर किसी को बोलने की अगल न हो, समझ न हो तो अच्छा है न बोलें इस तरह बोलने से तो कौम की बेइज्जती होती हैं इन्होंने कहा कि पंजाबियों और सिक्खों के साथ कोई धक्का नही हो रहा है। यह बिल्कुल गलत बात है। हरियाणा के किसी के साथ कोई धक्का नही हो रहा हैं यहां नौकरी के लिए सबको इंसाफ देने के लिए एस.एस.एस. बोर्ड और पब्लिक सर्विस कमीशन बने हुए है। एक केस भी अगर ये गैर–इंसाफी का लाकर मुझे बता दे तो मैं मान जाऊंगा। चेयरमैन साहब, यह

इसका कसूर नही, इनकी अनपढ़ता का कसूर है। अगर यह पढ़ा हुआ होता तो इस तरह की बात न करता।

सरदार तेजा सिंह : चेयरमैन साहब, मैं सरदार प्यारा सिंह से ज्यादा पढ़ा हुआ हूं। जहां तक केस बताने की बात है, मैनें जो दो केस कत्ल के बताए है उनके बारे मे सरदार प्यारा सिंह इंक्वायरी करवा कर देख ले। अगर मेरी बात गलत साबित हो जाए तो मैं अपनी सीट से इस्तीफा दे दूंगा।

सरदार प्यारा सिंह : चेयरमैन साहब, हरियाणा में किसी के साथ धक्का नही हो रहा है। हजारों लोग यहां नौकर हो रहे है। हाल ही में आई.टी.आई. के प्रिंसिपल सिक्ख लिए गए है, तीन ऐम्प्लायमैन्ट अफसर सिक्ख रखे गए है और इसी तरह से बहुत सी पोस्टों पर सिक्खों को लिया जा रहा है।

सरदार तेजा सिंह : वे तो पुराने लगे हुए है।

सरदार प्यारा सिंह : चेयरमैन साहब, मैं दावे से कहता हूं कि बंसी लाल सरकार ने सबको पूरा पूरा इंसाफ दिया है और हमारी कौम को भी पूरा इंसाफ यहां मिलता है। मेरे साथी ने जो कुछ कहा वह बिल्कुल बेबुनियाद है।

DISCUSSION ON GOVERNOR'S ADDRESS (Resumption)

चौधरी बनवारी राम : (जुंडला एस.सी.) चेयरमैन साहब, मैं आपके द्वारा सरकार से अर्ज करना चाहता हूं कि इस

अभिभाषण में एक्स सर्विसमैन के लिए कहा गया है कि उन्हे नौकरियां भी दी जायेंगी और जमीन खरीदने के लिए पैसा भी दिया जायेगा। हरियाणा के अन्दर कुछ एक्स–सर्विसमैंन ऐसे है जिनको कैरों साहब के वक्त में बीस साल के ष्पट्टे पर पांच–दस एकड़ जमीन दी गई थी। जब उनकी यह जमीने अलौट की गई तो वहां जंगलात थे। उनके अन्दर बहुत खाईयां थी, टिब्बे थे और लोगों ने अपने मकान बेच कर, अपने जेवरात बेच कर इस जमीन को काश्त के काबिल बनाया था। लेकिन अब यह सरकार उन से उस जमीन को छीनना चाहती है। अभी पिछले दिनों इनके खिलाफ बहुत मुकद्दमे किये गये। मुझे पता है कि उस टाईम पर तहसीलदार साहब ने इनको बहुत परेशान किया।

श्री सभापति : चौधरी रणसिंह इन्ट्रप्ट ने करे।

चौधरी बनवारी राम : चेयरमैन साहब, मैं अम्बाला अदालत मे गया था। इस हाउस में तो मैं इस अफसर का नाम नही लेना चाहता हूं। जबमैंने उनसे कहा कि इन एक्स–सर्विसमैंन ने देष की बहुत सेवा की है और ये बड़े देशभक्त रहे है आज भी देशभक्त है, इस सरकार के भी भक्त है, इनको आप सताओ तो उस अफसर ने कह कि हमने भी तो सरकार की नौकरी की है, इन ऐक्स सर्विसमैंन ने भी नौकरी ही की है।। इन्होंने कौन सी देशभक्ति की है ? तो इससे आप अन्दाजा लगाये कि एक इतना अड़ा अफसर उनको इस बुरी नजर से देखता है तो औरों का क्या होगा ? चेयरमैन साहब, अब यह सरकार इनको क्या देगी ? मेरे

विचार के अनुसार न तो आगे इस सरकार से क्या उम्मीद की जा सकती है। मैं तो अन्त में इनके विषय में यही कहूंगा कि जितनी यह सरकार उनके बारे में हमदर्दी दिखा रही है उसका ऐलान इसी सैशन में करे ताकि हमें उस बात का पता लग जाए और बाद में हम सरकार को पूछने वाले बन सके।

चेयरमैंन साहब गवर्नर साहब, के अभिभाषण में कहा गया है कि सरकार हरिजनों को जमीन खरीदने के लिए और दूसरी सहूलियतों के पैसा देगी। इन्होंने 99 लाख और 96 हजार एक दिया है और दो करोड़ रूपया एक है। इस प्रकार से तकरीबन तीर करोड़ रूपया बैकवर्ड और शड्यूल्ड कास्ट के लिए रखा है। मैं आपकी मार्फत इस सरकार से पूछना चाहता हूं कि हाउस में ऐसे ऐसे नुमायन्दे बैठे है जिनकी तीन–तीन और चार–चार करोड़ रूपए आमदनी है और इन्होंने कुल तीन करोड़ रूपये सारे बैकवर्ड और शड्यूल्ड कास्टस के लिए रखा है। क्या इस रूपए से उनका गुजारा हो जाएगा ? आज हमारे करनाल जिले के अन्दर 1300 या 1400 गांव है। उनके लिए तीन चार लाख रूपया दिया जाए तो सौ सो रूपया भी एक के हिस्से नही आयेगा। तो मैं इस सरकार से कहूंगा कि वह हमें इस धोखे में न डाले। सरकार दूसरी स्कीमों के लिए भी तो इतना पैसा खर्च कर रही है इस लिए इसे इनकी और भी सही ध्यान देना चाहिए। इतने रूपऐ से हरिजनों की भलाई होने वाली नही है। चेयरमैन साहब, कितने दुःख की बात है। सरकार कहती है कि हरिजनों की

बस्तियों की सिफाई कराई जाऐगी, लेकिन मै कहता हूं कि हम अपनी बस्तियों की सफाई खुद ही कर लेंगे, आप हमारे पेट का प्रबंध करो, गरीब बच्चों के लिए रोटी का प्रबन्ध करो। ये बस्तियों की गलत स्कीमें बना कर हमें धोखे में डाल रहे है।

नौकरियों की बाबत, हमारे यहां मंत्री जी बैठे हुए है और इनकों पता है क्योकि कैबनिट में भी फैसला हुआ है कि हरिजनों के लिए 20 परसैंट का कौटा फिक्स है, चाहे कैसी ही नौकरी हो पंचायत सैक्रेटरी तक की पोस्ट के लिए कोटा फिक्स है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि हरियाणा के अन्दर जहां भी इन्टरव्यू होता है वहां हरिजनों के लड़के पांच–सात जाते है लेकिन उन में से बेचारा कोई एकाध ही लिया जाता है और सभी बेचारे दिल तोड़ कर वापिस घर आ जाते है। इन गरीब बच्चों की हरियाणा में यह हाहल बनी हुई है। उनके मां–बाप तो कहते है कि नौकरी करो परन्तु नौकरी मिलती नही, कह से करे ? वे बेचारे आज खुदकशी करने पर तुले बैठे है। एक तरफ तो ये कोटा पूरा करने का एलान करते है दूसरी तरफ उनको नौकरियां मिलती नही। मैं यही कहूंगा कि जब तक हरिजनों का 20 परसैंट कौटा पूरा नही होता है तब तक उनकी जगहों पर दूसरी बिरादरियों के लोग न लिए जाएं, अगर सरकार को हरिजनों से प्यार है और सच्चा प्यार है। अगर सरकार इसी प्रकार से ही भर्ती करेगी तो आज जो 10 परसैंट की कमी हैं यह आगे जाकर 15 परसैंट की कमी हो जाएगी। जहां भी कोई लगता है सिफारशी ही लगता हैं

चाहे रोड़वेज की महकमा हो या कोई और हो। सरकार हमें बताये कि 20 परसैंट का कोटा कैसे पूरा है ? जो हालत हमारे बच्चों की है उस हिसाब से सरकार को चाहिए कि हमारे बच्चों को रौजगार दे। हम रोजगार करके अपने बच्चों का पेट पाल सकते है। आज के दिन हामरे एम.ए.बी.ए. और दस–दस जमात पढ़े–लिखे लड़के धक्के खाते फिर रहे है। आजकल तो जिनकी कोई जमीन है, फैक्टरी है उन्ही के बच्चों को सर्विस मिलती है। हमारे बच्चे उनकी जमीनों पर दस–दस जमात और बारह जमात पढ़ लिख कर कस्सी से काम करते है। यह कितने अन्याय की बात है और कितने अफसोस की बात है ? मेरे साथी अब्दूल रज्जाक बेराजगारी के बारे में जिक्र कर रहे थे लेकिन मैं कहता हूं कि बेरोजगारी इस प्रकार से कभी खत्म नही हो सकेगी जब तक इस देश में बगावत और क्रंति नही आयेगी।

चेरमैन साहब, गवर्नर साहब के ऐड्रैस में बूढ़ों की पेन्शन के बारे लिखा है लेकिन देहात में जो बूढ़े रहते है उनकी डाक्टरी कौन कराये ? जिसके पास रोटी खाने के लिए पैसे नही वह डाक्टरी के लिए पैसे कहां से जायेगा ? निा डाक्टरी हुए सरकार पेन्शन मन्जूर नही करती । उनसे डाक्टरी सर्टिफिकेट मांगती है। इस बारे में मैं सरकार से यह विनति करूंगा कि जो बूढ़े मा–बांप है, जो बेससहारा है, जो बेचारे रोटी मांग कर खोते हैं उनको अवश्य ही पेन्शन दी जाये।

चेयरमैंन साहब, जिस देश मे एक बेसहारे का एक बेसहारा बाप या उसकी मां तड़प–तड़प कर मरते हों, उस देश के बारे मे मैं यह समझूंगा कि कुछ दिन के अन्दर वह देश भी नही बचेगा। जिस देश के मां–बाप भूख से तड़पते हो और तड़प कर मरते हो, वह कैसे बच सकेगा ? इसलिए सरकार को चाहिए कि गांव मे जितने भी ऐसे बेसहारा मां–बाप है उनके लिए डाक्टरी करवाने के लिए वह सरकार के पास कैसे आ सकते है ? चेयरमैन साहब, यह बहुत अफसोस की बात है कि आज हमारे मां–बाप बेसहारा है और सरकार उनके नाम तो जरूर ले रही है कि इसने उनकी 25–30 रूपये पेन्शन कर दी है, लेकिन आ 5 % बूढ़ों को भी पेंशन नही है। मैं सरकार से कहूंगा कि वह जल्द से जल्द इन बूढ़ों और बेसहारों की समस्या पर विचार करे और उनके खाने पीने और कपड़े आदि का प्रबन्ध करे, नही तो चेयरमैन साहब, 'गरीब को न सताओ गरीब रो देगा और तुझे ती दुनिया से खो देगा' वाली बात हो ताएगी। हरिजन हरियाणा में जितनी दिलचस्पी से काम कर रहे है, अगर उनकी समस्यायें ठीक प्रकार से हल न हुई तो उनका शाप हरियाणें को न जाने कहां लाकर डूबो दे। इन भाइयों को कही तो रेही की जमीन दी गई है और कही जमुना में दी है और आज किसी ने 5–7 हजार रूपण भरे हुए है, किसी ने 18 हजार रूपए भर कर वह जमीन ली हुई है। लेकिन वह सारी की सारी जमीन जमुना के आस–पास के इलाके में है इसलिए वे बेचारे रोते फिरते है। अब न सरकार उनको रूपया वापस करी है और न ही दूसरी जगह जमीद देती है बल्कि यह कहती है कि वह

तो कैंसल हो गई। बे बेचारे तबा हो गए है। एक तरफ तोसमाकज को सुधारने की बाते हो रही है और दूसरी तरफ बरबाद करने की हो रही हैं कितने अफसोस की बात है कि जिसकी दो या तीन किश्तें नही भुगती उसकी जमीन कैंसल की जा रही हैं सरकार उनके लिए न तो पानी का इंतजाम करती है और न बैलों का इंतजाम करती है। एक तो सरकार ने उनको खराब जमीन दी हुई है। दूसरे जिन लोगों की तीन–तीन किश्तें रूक जाती है। उनकी जमीन खोस लेती है। एक तरफ हिन्दुस्तान के अन्दर सरकार के बड़े–बड़े नुमायंदे है जो दस साल तक रूपया अदा नही करते उनका कुछ नही बिगड़ता दूसरी तरफ एक गीरब जो तीन किश्त अदा नही करता उनको उजाड़ रहे है। मैं सरकार को कहूंगा कि अगर किसी हरिजन की किश्त बाकी है, वह किश्त फिर ले ली जाए और उस पर सूद थोड़ा लिया जाए। अगर हरिजनों को जमीन दी है तो पहले सरकार वहां पानी का इंतजाम करे, अगर इसमें पानी होगा तो पैदावार भी हो सकेगी और किश्त भी नही रूकेगी और वह बरबाद होने से भी बच जायेंगे। चेयरमैन साहब, यह छुआछुत का कानून कितने दिनों से बना रहे है जब से हिन्दुस्तान आजाद हुआ, महाम्मा गांधी जी हुए, तब से छुआछुत को रोकने की कोशिश की जा रही है। छुआछुत आज स्कूलों को रोकने की कोशिश की जा रही है। छुआछूत आज स्कूलों में ज्यों की ज्यों हैं हरिजनों के जितने लड़के टीचर्ज है वे हमारे पास आकर कहते है कि हम नौकरी छोड़ देंगे, हमारे ऊपर जुल्म हो रहा है। मैं सरकार को चैलेंज करता हूं कि अगर सरकार इस

छुआछूत को खत्म करना चाहती है तो वह ठोस कदम उठाये। मैं सैंकड़ो केस ऐसे बता सकता हूं जो इन लोगो से छुआछूत करते है अगर इनके बारे में हम शिकायत करें तो इनमे से कोई किसी एम.एल.ए का रिश्तेदार पाया जाएगा कोई किसी मिनिस्टर का रिश्तेदार पाया जायेगा और कोई किसी अफसर का रिस्तेदार का रिश्तेदार पाया जायेगा। (घंटी) मैं तो कई दिनों के बाद बोला हूं इसलिए मुझे थोड़ा टाइम और दे दें। चेयरमैंन साहब, हमारे मंत्री महोदय यहां पर बैठे है, चौधरी साहब भी नोट करले कि आज हरियाणा के अंदर इतनी छुआछूत है और हरिजनों के ऊपर इतने जूल्म हो रहे है, जिनकी तरफ जल्दी से जल्दी ध्यान दिया जाना चाहिए।

अभी मेरे साथी सरदार तेजा सिंह ने अपने भाषण में कहा कि हमारे यहां बहुत जयाद कत्ल होते है,, जुल्म होते है, लेकिन जहां तक मै समझता हूं रूपण मे से 12 आने जो जुल्म है वह खत्म हो गया है और सिर्फ चार आने रह गया है। जहां तक कत्लों का संबंध है आज भाईचारें में कत्ल होते है लेकिन जहां तक हरिजनों का ताल्लूक है उनके इतने कत्ल नही होते,जितने पहले होते थे। जब यह सरकार आई है हिसार मे सिर्फ चार–पांच लड़कियों का कत्ल हुआ है। हम यह नही कहते कि हमारा कत्ल किया है। लेकिन हमारे यहां जो छुआछूत का व्यवहार है वह अभी भी है। मैं सरकार से कहूंगा कि चार आने भी जो जुल्म रह गया है इसको भी समाप्त करदे ताकि हरियाणा मे राम राज्य हो।

चेयरमैंन साहब, गवर्नर साहब के इस ऐड्रैस मे जो कमियां थीं वे सारी पिछड़े इलाको के लिये थी हरियाणा की समस्या को हल करने मे ंकोई कमी नही थी। मैं आज भी आपके द्वारा सरकार से प्रर्थाना करूंगा कि अगर सरकार इन कमियों को दूर करदे तो मैं तो यह कहूंगा कि हरियाणा मे ऐसा राम राज्य न कभ आया है और न कभी आयेगा। यही मेरी प्रार्थना है। मैं आपका धन्यवाद करता हूं जो आपने मुझे बोलने का समय दिया है।

सिंचाई मंत्री (श्री रामधारी गौड़) : आदरणीय चेयरमैन साहब, आज हाउस के सामने राज्यपाल के अभिभाषण पर बहस चल रही है और जो प्रस्ताव मेरे साथी श्री बनारसी दास जी ने हाउस के सामने पेश किया हैं उस का अनुमोदन करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं। राज्यपाल महोदय हने जो अभिभाषण हाउस मे ंपढ़ा वह बढ़ते हुए हरियाणे की तरक्की की एक जीती जागती तस्वीर है। हर ढंग से हरियाणा ने तरक्की की है, इस बात की चर्चा हरियाणा में ही नही, दूसरे सूबों मे भी बल्कि बाहर के मुल्कों मे भी हैं जब कोइ चीज तबक्कुह से जयादा, उम्मीद से जयादा हो जाए तो उसका चर्चा चलना स्वाभाविक हैं आप जानते है कि हरियाण की क्या हालत थी। हरियाणा बनने से पहले यहां क्या हालत थी और हरियाणा बनने के बाद कितनी तरक्की हुई है। जो काम 50 सालों में नही हुआ था वह दो सालों मे ंहो गया हैं आज हमारे कुछ कर्त्तव्य है। जो कुछ हमारे यहां काम हो रहा है उसमें हम सब को पूरा योगदान देना चाहिये। लेकिन कुछ हमारे भाई

ऐसे है जिन का एक ही ढंग है कि सरकार जो भी काम करती है उसकी मुखलियत की जाये चाहे कितना ही बड़ा काम क्यों न हो। पहले जमाने में नटो का तमाशा होता था और आज भी होता है उस मे एक आदमी बांस पर चढ़कर चाहे अपने कितने ही अच्छे अच्छे करतब दिखाने कि कोशिश करता था लेकिन नीचे जो ढोलकी वाला भाई बैठा होता था वह यह कहता जाता था कि कोई अच्छा नही मैं नही, मानतां ये भाई भी उस ढोलकी वाले तरह मैं न मानूं वाली बात करते है। जुई और लोहारू केनाल के बारे में तमाम देश मे ंचर्चा चल रही है। लेकिन ये कई दफा लोगों को भड़काने के लिए पब्लिक में गलत बाते कहते है क्योकि इनका काम ही यही है। कहते है कि इन नहरों मे पानी जाने से जींद का पानी कम हो गया क्योंकि लोहारू जीन्द का पानी वहां पहुंच गया है। लेकिन मै कहना चाहता हूं कि लोहारू ड्रेम नं. 7 का पानी लेगा और कही का पानी नही लेगा और यह नहर तीन महीने के लिए चलेगी। ये कहते है कि जब यह नहर तीन महीने के लिये चलेगी तो इस पर इतना पैसा लगाने का क्या फायदा है ? इन भाईयों को पता होना चाहिए कि जिन इलाको ंमे ंइस पानी का इंतजार है वहां आम तौर पर कहत पड़ता रहा है, पहले वहां कोई फसल नही होती थी इन नहरों का पानी जाने से वहां पर कम से कम खरीफ की फसल तो हो जायेगी और यदि जाड़े में थोड़ी सी बारिश हो गई तो आषाढ़ की फसल भी हो सकती है। क्योकि खरीफ की फसल को काटने के बाद ये नहरे जो आखिरी पानी देंगी उससे रबी की फसल बोई जा सकेगी। जाड़े में भी अगर

बारिश हो जायेगी तो वह फसल भी कामयाब हो जायेगी। लेकिन उन इलाकों में जहां पर कि पांच–पांच साल तक कहत पड़ता रहा है। और जहां लोग दूसरे प्रान्तों को जाने के लिए मजबूर हो जाते थे, अगर हमने वहां पानी पहुंचा दिया तो हमारे इन भाईयों मे पेट में मरोड़ आने लगक गये ह। मैं तो कहूंगा कि वे सब हरियाणवी है और उनको हमे पानी पहुंचाना चाहिए। जो पानी समुद्र में जाया जाता था ओर जो ड्रेन नं. 7 का पानी जब बारिश होती थी तो हरियाणा के गांवो के गांवो को डूबों देता था, बहुत से भागों को तबाह करता था और खास कर गोहाना की तहसील में यह ड्रेन इतनी भयानक तबाही करती थी कि इसके नाम को सुन कर लोग कांप उठते थे और अपने घरों को छोड़ने के लिये मजबूर हो जाते थे, ओज यदि उसके उस पानी का लोगों को फायदा पहुंचेगा, तो क्या यह एक बहुत अच्छी बात नही ? जब ड्रेन नं. 7 में फकड आता था तो आषाढ़ी और सावनी की फसले भी मर जाती थी। जब यदि उस पानी को बांध करके हम लोहारू तथा जुई के उन इलाकों में ले जायेंगे जहां पर कि आम तौर पर कहत पड़ता रहा है, तो इसमे ंक्या नुक्सान हुआ ? मैं समझता हूं कि इससे स्टेट को बहुत फायदा होगा। वहां पर अनाज पैदा होगा इससे हमें वहां से कइ किस्म के टैक्स मिलेंगे। जितनी हमारी वहां पर लागत आयेगी, मैं समझता हूं कि उससे ज्यादा हमे ंवहां से आमदनी हो जायेगी और फिर वह इलाका कहत की जद से बच जायेगा।

हमें धनबाद से खत आये है कि आपने बड़ा कमाल किया है जो इतने थोड़े अर्स मे, इतना थोड़ा पेसा लगा कर , इतना अच्छा काम किया है। हमारे विरोधी दल के सदस्य यहां यह कहते है कि नौ महीने तो वह कम से कम 3 महीने तो पानी का फायदा हो ही जायेगा। जो बरसाल का पानी पहले समुद्र मं फजूल चजा जाता था यदि उसको रोक कर हम जुई नहर मे डाल देते है और उसे वहां देते है जहां पर कि जमीन प्यासी है, लोगों को पानी का पानी नही मिलता, तो कोई बुरी बात नही है, एक दफा एक हल्के मे ंजाने का मुझे मौका मिला। एक अभावग्रस्त गांव जहां पानी का पानी नही मिलता था, इस योजना द्वारा पानी भेज देते है और पानी भी वह जो या तो समुद्र मे जाया जा रहा हो या फिर गांव के गांव को डूबो देता हो तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है ? हमारे ये विरोधी दल के भाई जो कहते है कि हरियाणा के अन्दर कुछ नही हो रहा, मै इन से कहूंगा कि यदि आप देखे, जहां कहीं भी आप जायेंगे आपको कहीं सड़कों पर मिट्टी पड़ती हुई मिलेगी, कहीं नहरों के माइनरों को ऊंचा किया जा रहा होगा और कहीं नहरों के किनारों को दुरस्त किया जा रहा होगा। जहां भी जायेंगे, हर जगह आपकों तरक्की के ही काम होते हुए दिखाई देंगे। लेकिन हमारे विरोधी दल के भाईयों को ऐसे काम देखकर दुख होता है कि अब वह पब्लिक के सामने क्यो कहें ? जब वह पब्लिक को गलत बाते कहंगे तो लोग कहेंगे कि तरक्की का काम हो रहा है। यह चाहे कह दे कि हरियाणा के अन्दर कोई विकास का काम–धन्धा नही होता लेकिन लोगों को

यह काम होता दिखाई देता है, इसलिए बातों को मानेंगे नही। मुझे पता है, जहां कही भी ये विरोधी दल वाले जलसे करते है, ये लोगों को जबरदस्ती बुला–बुला कर इकटठा करते हैं इनकी बातों को सुनने के लिये लोग आते भी नही है। यहां मेरे एक भाई ने एक बात कही थी जिसके सिलसिले मे गलत आंकड़े देखकर उसने हाउस को मिस लीड किया। उसने बिजली टैरि के मुताल्लिक कहा कि यहां पर उसका रेट 15 पैसे से बढ़कर 37 पैसा हो गया है। मै सदन को बाता देना चाहता हूं। कि हमारे यहां सन् 1968 से बिजली के टैरिफ का रेट 15 पैसे है और हमने इसे कतई नही बढ़ायां ये लोग कई बार यह भी कहते है कि ब्रेक डाउन बहुत होते है। आप देखिए इस साल पिछले साल से थोड़े ब्रेक डाउन हुए है, इसका मतलब यह है कि हमने इस कार्य मे सुधार किया है। पहले हमारी ज्यादा ताकत हरेक गांव में बिजली पहुंचाने के लिये लगाई गई थी अब वह डाउन में सुधार के लिए लगायी जा रही है। हमने ब्रेक डाउन मे सुधार लाले के लिए काफी तजवीजे बनायी है। मेरे भाई श्री सत्य नारायण जी ने कहा कि हरयाणा स्टेट इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड ने इतना सामान खरीद लिया है कि वह फालतू पड़ा ह। और अगले 20 साल मे ंजाकर कही उसकी खपत हो सकेगी। मैं हाउस को बताना चाहता हूं कोई ऐसी बात नही हुई हैं जो ंभी सामान खरीदा जाता है, वह एक प्लान के अनुसार खरीदा जाता ह, जितनी जरूरत होती हे, जतना ही खरीदा जाता है, फालतू नही। ऐसी तो कोइ बात है नही कि पेसा कही आसमान से पड़ रहा हो और हम सोंचे कि झोली भर लो, और उसका

फजूल सामान खरीद ले। जितनी जरूरत होती है और जितना हमें काम करना होता है। बिल्कुल उतना ही सामान खरीदार जाता है क्योंकि पैसे का भी तो इन्तजाम करना पड़ता है।

कुछ भाई कई बार यह भी कहते है कि पोल ऐसे थे, कम्पनी ऐसी थी, लेकिन मै उन्हें बताना चाहता हूं कि यह कहना कि खम्भे बोदे थे या रिजैक्टिड थें, यह ठीक नही है। कभी ऐसा नही हुआ क्योकि हम जो माल खरीदते है उसको पहले टेस्ट किया जाता है, फिर उन्हे देखने के लिए इन्स्पैक्टर जाता है और पूरी देखभाल करके माल लेता है। उन्हे पेमैन्ट तब की जाती है जब कि सामान की अच्छी तरह देखभाल करके तसल्ली कर ली जाती है यदि ऐसा होता, जैसे कि यह भाई कहते हे कि खम्भे बोदे हे तो आज सब के सब टूट पड़े होते। यह ठीक है कि भगवान की दया के बिना आंधी या दूसरी आफ्तों का कोई चीज भी मुकाबला नही कर सकत, उसमें यहां तक कि मकान और दरख्त तक भी टूज जाते है। जहां करोड़ों की तादाद में खम्भे लगे है, वहां यदि एक–दो खम्भे टूट जाये तो उसमे कोई ऐसी–वैसी बात नही। जहां बढ़िया गुड़ पड़ा होता है, वह गूंगे वाला गुड़ भी खाया जाता है। मैं यह तो नही कहता कि हमारे से कोई गलती ही नही होती क्योकि यह स्वाभाविक ही है कि हरेक आदमी से भूल हो ही जाती है, लेकिन ये भाई छोटी सी बात को बहुत ज्यादा उछाल देते है। जनता तो इनकी बातें सुनती नी, क्योंकि जनता के सामने विकास के काम हो रहे है, लेकिन यह तो

नट वाली बात करते है कि मैं नही मानूंगा, अभी भी कसर रह गयी हैं, इनकी बाते तो हमेशा चलती ही रहेंगी, लेकिन जनता मानती है, जहां हमारा कोई जलसा वगैरह होता है, वहां लोग हमारी बात सुनने के लिए हजारों की तादाद में आते है और खुद अपनी जबान से यह कहते है कि हरियाणा में बहुत तेजी से विकास हो रहा है। बराबर के जो पड़ौसी प्रांत है, वह भी इस बात को मानते है कि हरियाणा मे जितना काम पिछले दो सालों में हुआ है उतना पिछले 50 सालो मे भी नही हुआ था। यदि तराजू के एक पलड़े में 50 साल का काम और दूसरे पिछले 2 साल का काम रखा जाये तो 2 साल का काम झुक जाएगा। लेकिन यह भाई तो हमेशा यही कहेंगे कि कुछ नही हो रहा, दंगे बढ़ रहे हे, कत्ल हो रहे है, लेकिन मैं कहूंगा कि यह सब कुछ भी पहले सालों की निस्बत कम हुआ है और आज हामरे यहां शन्ति है। आप देखिए देश में जैसा वातावरण है, उसके मुकाबले मे सबसे बढ़िया अमन हरियाणा में है। कलकत्ते से, बम्बई से और दूसरे प्रान्तों से जो व्यापारी यहां आते है, वह यही कहते है कि हरियाणा जितना अमन कही भी नही है। वह यहां आने की कोशिश करते है और हमें कहते है। कि हमें सुविधायें दो, हम यहां कारखाने लगायेंगे, क्योंकि यहां का कोई झगड़ा नही है, पूरी प्रोटैक्शन मिलती है और यहां का वातावरण बिल्कुल शांत हैं यहां पर सिवाय विकास की बातों के, हम किसी ओर भी ध्यान नही देते। इनकी बातें हम सुन जरूर लेते है, लेकिन हम समझते है कि हमे इनकी बातो पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि हमारी और

जनता कि तवज्जुह तो विकास के कामों मे लगी हुई है। हरियाणा के लोग जहां कहीं पर भी हुक्के पर इक्ट्ठे बैठते है, विकास की ही बाते करते हैं मैं समझता हूं कि जिस स्पीड से हरियाणा मे काम हो रहा है, यदि ऐसे ही होता रहा तो चन्द सालों में ही हरियाणा भारत की चोटी पर होगा। इन भाइयों को दु:ख ही होगा कि हम अब जनता में जाकर क्या कहेंगे ? जब काम मुकम्मल हो जायेगें तो लोग इनकी बातें बिल्कुल ही नही मानेंगे। हां, हाउस मे यह अपनी भड़ास अवश्य निकाल लेते है, और अपनी स्पीच की कापियां ले जाकर कहते है कि हमने हाडस में गवर्नमैंट के परखचे उड़ा दिये, रोग काट दिया। जब प्राइवेट तौर पर इनकी बातें होती है, तब तो यह भी कहते है कि हरियाणा मे बहुत विकास हो रहा है। और हमें इस बात पर गर्व हैं लेकिन यहद यह यहां हाउस मे भी ऐसी बाते करने लगे तो लोग इन्हे कहेंगे कि यह अपना पार्ट ठीक से हनी प्ले कर रहे। तो मैं समझता हूं कि राज्यपाल महोदय का अभिभाषण हरियाणा की तरक्की की मुह बोलती तसवीर हैं और इसको सब मानते है। मैं इतना ही कहकर बैठ जाता हूं।

चौधरी रणबीर सिंह (किलोंई) : सभापति महोदय, मैं पहले बोल रहा था लेकिन अध्यक्ष महोदय ने एक सदन की समिति की बैठक के बारे मे कहा कि वहां से आने के बाद मैं अपना भाषण जारी रखूं। मैं यह जिक्र कर रहा था कि हमारे राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में हमारे पड़ौसी राज्य पंजाब के राज्यपाल के अभिभाषण का जिक्र किया वह बिल्कुल सही हैं जिस

समय हमने देश का विधान बनाया था उसके अन्दर राज्यपाल का औहदा बड़ी सोच समझकर स्टेट से बाहर रखा था और राज्यपाल को लगाना केन्द्रीय सरकार के तहत रखा गया था। यह ठीक है कि राज्यपाल को जो अभिभाषण होता है वह एक तरह से उसकी सरकार के द्वारा लिखाया हुआ होता है और वह उस सरकार के विचार होते है। अगर दोनों राज्यपालों के अभिभाषण को देखा जाए तो ऐसा लगता है कि एक राज्यपाल पाकिस्तान को और दूसरा हिन्दुस्तान का। मुझे खुशी है कि हमारे राज्यपाल के केंद्र ने जो फैसला किया है उसको माना है। लेकिन पंजाब के राज्यपाल ने केंद्र के फैसले को बाजारू फैसले के तौर पर माना है। यह चीज हमारे देश के राजनैतिक इतिहास की एक बड़ी बात है और इन्ही बातो को देखते हुए लोकसभा के स्पीकर ने हिन्दुस्तान की असैम्बलियों के नुमांयंदों को बुलाकर यह बात उनके सामने रखी कि संविधान को दुबारा लिखने की कोई आवश्यकता है या नहीं मैं समझता हूं वक्त आ गया है, अगर इसी तरह से चलता है तो चुनाव के बाद दोबारा संविधान लिखने के लिए कंस्टिचुएंट असैम्बली बिठानी पड़ेगी। यह बेडे अफसोस की बात है कि एक राज्यपाल ऐसी भाषा बोले जो दूसरे देशे के राज्यपाल की भाषा मालूम पड़े और दूसरा राज्यपाल ढंग से ही बोले। इस बात से कोई इंकार नही कर सकता कि फाजिल्का और अबोहर हिन्दी भाषी क्षेत्र है और बाकायदा यह मानी हुई बात है लेकिन फिर भी पंजाब के राज्यपाल महोदय कहते है कि जो भाषा अतानी बोली जाती है उसके बिनां पर फैसला किया जाए।

सभापति महोदय, हिन्दुस्तान का कायदा ममिलनाडू मे लागू होगा। किसी आदमी की भाषा क्या हो संविधान में इसका अधिकर हर एक को ही दिया गया हैं और अगर वह नाबालिग है तो उसक फैसला उसके माता–पित करेंगे। यह बताना कि मेरी मातृभाषा क्या है यह मेरा मौलिक अधिकार है। अगर मैं तमिलनाडू मे चला जाऊं और वहां मै अपनी मातृभाषा तमिल लिखाऊं तो मुझे कोई रोक थोड़े ही सकता है ? पंजाब वाले कहते है कि फाजिल्का में पंजाबी बोली जाती है और इसी लिए वह पंजाबी भाषी एरिया है। लेकिन हम कहते है कि वहां की मातृभाषा हिन्दी है।

सभापति महोदय, इसके बाद मैं दूसरी तरफ जाना चाहता हूं। हमारे राज्यपाल ने बड़ी चर्चा की कि यहां पर अनाज का उत्पादन बढ़ा है। इस बात से कोई इंकार नही कर सकता लेकिन यह तो तथ्यों का पीछे रखकर कोई बात की जाने वाली बात हैं जो बात हमारे हक में हो वही बात हम कहें यह अच्छी बात नही हैं और जो हमारे खिलाफ पड़ती हो उस बात को छिपाया जाए यह तरीका अच्छा नही है। सभापति महोदय, मेरे पास हरियाणा सरकार की छपी हुई सूचना है उसके अन्दर यह लिखते है। कि 1967–68 के अन्दर अनाज की पैदावर 39.70 लाख टन थी और 1969–70 के अन्दर पैदावार 46.26 लाख टन हुई। यह मुकाबला करते है 39 और 46 का। यह 1968–69 मे जो 27 लाख टन पैदावार हुई यानी 39 से 27 लाख टन रह गई यानी बारह लाख टन घट गई, उससे मुकाबला नही करते। हमें 1967–68 में

जिसके बाद नए सदन ने काम सम्भाला उससे मुकाबला करना चाहिए। जहां तक तिलहन की पैदावार का ताल्लुक है वह 1967–68 में एक लाख इक्कीस हजार टन थी और 1969–70 के अन्दर 0.81 लाख टन। इस तरह तिलहन की पैदावार भी घट गई। इससे आगे कपास की पैदावार का जिक्र है वह 1967–68 के अन्दर 3 लाख 74 हजार टन थी और 1969–70 के अन्दर वह 3 लाख 40 हजार रह गई इस तरह से वह भी घट गई। जहां तक गन्ने की पैदावार का ताल्लुक है वह 1967–68 के अन्दर 4 लाख 73 हजार थी और 1969–70 के अन्दर ववह 7 लाख 92 हजार हो गई। यह अच्छी बात है कि हम गुड़ की पैदावार आगे बढ़े है। इस बात को कौन जानता है कि यह जो अनाज और गन्ने की पैदावार बढ़ी है उसमे हमारा कितना हाथ है और कुदरत का कितना हाथ है।

सभापति महोदय, पंजाब ओर हरियाणा का जो बिजली का श्रोत है वह दोनों का एक ही है और वह है भाखड़ा और उनका ग्रिड रेट भी एक ही है। जिस रेट पर पंजाब को बिजली दी जाती है उसी रेट पर हरियाणा को बिजली मिलती है। आमतौर पर ट्यूबवैल चलाने के लिए पांच हार्स पावर की मोटर चाहिए। वहां पर एक हार्स पावर का खर्च 90 रूपया साल हैं वे पांच हार्स पावर पर 450 रूपया साल में लेते है। एक साल में मैक्सिमम 450 रूपया वे लेते हैं मीटर में वे नही गिनते। लेकिन हमारे यहां कैथल के

अन्दर एक ट्यूबवैल के लिए डेढ़ हजार या दो हजार रूपया देना पड़ता है। (विघ्न)

जो सह है हम उस को क्यों न समाने रखे, हमको कारण बताने चाहिए कि क्या फर्क हैं ? हम कहते है कि हमने लाईने बहुत बिछा दी, ठीक है, यह भी कोई मामूली बात नही है लेकिन उन लाईनों का तब तक फायदा क्या है, अगर बिजली लोगों को पूरी नही मिल पाती। इस लिए आयप सचाई को क्यो छिपाते है ? आप यह कह सकते है कि हमारा खर्चा जयादा जो गया है, हम पंजाब के मुकाबले मे अपने अधिकारियों को तनखाहे ज्यादा देते है लेकिन सचाई को छिपाने की कोशिश करना प्रजातंत्र के सूत्र के खिलाफ है। हमारी सरकार कहती है, कि बिजली देने के मामले में हम बहुत आग है, यह अच्छी बात है इससे किस को खुशी नही होगी ? हमे सब से ज्यादा खुशी होगी। हमने वह भी दिन देखा था सदन के अन्दर जब सवाल के जवाब में कहा गया था कि रोहतक में बिजली देना बंद हैं खुशी की बात है हमारे पण्डित जी आए, उन्होने कहा कि हरियाणा के हर एक गांव को बिजली दे दो। लेकिन बिजली देने के मायने है कि वहां तक तार बिछा दी जाये और बिजली पीछे से जाए न। इससे मै समझता हूं कि न लोगो को फायदा होता है , न विजली बोर्ड को ही फायदा होता है। फायदा तब होता है जब बिजली मिले और लोग पैसा दे। चेयरमैन साहब यहां पर कहा गया कि 40 फीसदी लोड खेती पर खच्र होता है। आप जानते है कि किसनों

के ट्यूबवैल हफ्ते में कितने दिन चलते है और कितनी उनको बिजली मिलती हैं ? यहां पर बहिन चन्द्रावती जी के सवाल के जवाब मे यह कहा गया कि इसके अंकड़े नही है ंसभापति महोदय, हरेक तहसील के आंकड़े इकट्ठे हो कसते है, हों मैं इस बात को मानता हूं कि उसके लिए समय चाहिए ओरसमय दिया जा सकता है। इनको वह आंकड़े देने चाहिए। लोड सैंक्शन्ड है लेकिन बिजली मिलती नही तो अकेली सैंक्शन को आप कमर पर उठा कर फिरते है। मै कहता हूं कि अगर बिजली नही मिलेगी तो पैदावार कैसे बढ़ेगी ? इसलिए हम को चाहिए कि वह भाषा हम बोले जिस को आम लोग समझ सके। सभापति महोदय, हरियाणा सरकार की जो स्टैटिस्टिक्स बुक छपी है उस में से मैं हाउस को आंकड़े बताना चाहता हूं। बिजली के बारे में हरियाणा की कया पोजीशन है इसका उन्होंने चार पांच तरीके से मुकाबला किया है। यह मेरे अपने आंकड़े नही, सरकार की खुद की छपी हुई किताब हैं यह इसके पेज, 128, 129 और 130 पर लिखें हुए हैं उस में इन्होने हरियाणा का हिन्दुस्तान की बाकी रियासतों के साथ मुकाबला किया हैं एक मुकाबला यह है कि कितने यूनिट यहां पर फी आदमी इस्तेमाल करता है, उस में हरियाणा का सातवां नंबर है, हमारा पड़ोसी प्रदेश जिसके हम हिस्सेदार थे वहां पर हर आदमी के हिस्सें 166.67 यूनिट पर कपिटा खर्चा है जबकि हरियाणा में सिर्फ 68 है। इसमे ं100 का फर्क हैं सभापति महोदय, हालांकि बिजली में हमारा उन से ज्यादा हिस्सा है। यह बात मैं मानता हूं कि हमारे यहां बिजली में तरक्की हुई है। 11,000 किलोवाट की

लाईन सारी जगह पर बिछा देना कोई छोटी बात नही है लेकिन उस के बाद अगर हम हाथ पर हाथ रख बैठ जाएं तो उस से काम नही बन सकता इसी तरह एक हजार की आबादी के पीछे बिजली कितनी खर्च होती है उस का दूसरे सूबों के साथ मुकाबला करके यह बताया है कि हमारा सातवां नंबर है इसी तरह एक वर्ग किलोमीटर इलाके के अन्दर हरियाणा मैं कितनी बिजली खच्र होती है और दूसरे प्रदेशों मे कितनी बिजली खर्च होती उस मे ंभी इन्होने हरियाणा का सातवां नंबर दिखाया हैं सभापति महोदय, जहां तक बिजली की लाईन बिछाने का ताल्लुक था इस में कोई शक की बात नही हम बहुत आगे निकल गए है लेकिन जहां तक लोगों को बिजली देने का ताल्लुक है इनका कहना चाहिए था कि अभी हम बहुत पीछे है और भगवान अगर हमारा साथ देगा तो हम उस दौड़ में भी आगे निकलेंगें। सभापति महोदय, इसी तरह जो बिजली बिकती है उस में मिलियन किलोवाट के अन्दर भी हरियाणा का स्थान छः लाख 54 हजार किलोवाट पर आवर बिजल खर्च होती हैं यह आंकड़े मैं अपनी तरु से नही दे रहा हूं यह इनकी अपनी स्टैटिस्टिक्स बुक में दिए हुए है।

श्री बंसी लाल : चौधरी साहब, यह कौन से सालकी है ?

चौधरी रणबीर सिंह : यह तो आप ने अभी चार दिन पहले तकसीम करवाई थी। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) अध्यक्ष महोदय, इसके इलावा नौकरियों की बात कही गई। (विघ्न),

श्री अध्यक्ष : चौधरी साहब, आप और कितना टाईम लेंगे ? आप को 19 मिनट पहले बोलते हुए हो गए है, आप ने 11. 20 पर बोलना शुरू किया था। मैं अरन को चार मिनट और देता हूं।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहब, इसी तरह से हम ने नक्शा दिखाया है कि जो स्टैम्पस है, उनके ऊपर हमारी आमदनी 1967–68 के मुकाबले में काफी ज्यादा हुई है। उसके मायने क्या है ? (विघ्न)

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, चौधरी साहब ने जो फिग्र्ज बजाए है पंजाब के, मै उन की इतलाह के लिए बताना चाहता हूं कि उस में नंगल फर्टिलाईजर फैक्टरी की बिजली की कन्जम्पशन आती है।

चौधरी रणबीर सिंह : लेकिन मुख्य मंत्री साहब, यह तो आप की किताब कहती हैं मुख्य मंत्री साहब की बात दुरूक्त है, मैं उसको मानता हूं लेकिन किताब में उस तरह से नही छपा हुआ। यह आप की तरफ से ही हमें मिली है और इस पर गवर्नमैंट की मोहर लगी हुई है यह मुझको तीन दिन पहले दी गई थी। अध्यक्ष

महोदय, यह जो बीच में इन्ट्रप्शन्ज हुई क्या यह समय मेरे समय मेरे टाईम मे ंसे काटा जाएगा।

श्री अध्यक्ष : नही चौधरी साहब, आप के समय में से नही काटा जाएगा।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहब, सेल्ज टैक्स में हमारी आमदनी तकरीबन डबल हुई है, तो वह किसी के घर से तो आती नही, वह तो हमारे से ही ली जाती हैं इरीगेशन के बारे में बड़ा शोर करते है कि इस परन जितना पहले रूपया खर्च किया था अब उस से डबल हो गया है। लेकिन उस किताब को अगर आप पढ़े तो यह जान कर ताज्जुब होगा कि हमे जो इस से आमदनी होती थी वह पहले से घट गई है। मैं इन से पूछना चाहता हूं कि इस प्रदेश को चलाने की क्या यही तरकीब है ? हम जो ब्याज की रकम लेते है वह तीन करोड़ रूपए सालाना से भी अधिक बढ़ गई है, अगर उस पैसे को अच्छे काम पर जैसे पैदावार बढ़ाने के लिए लगाया जाए फिर तो उसका फायदा है वरना मैं समझता हूं कि यह स्टेट का दिवाला निकालने वाली बात होगी। अध्यक्ष महोदय, जो एक वक्त डींग होती है वह दूसरे वक्त बुराई हो जाती है। मैंने एक दफा अखबार में पढ़ा, पता नही सही है या गलत और इस बारे मे ंवही बतायेंगे, लेकिन हमने यह पढ़ा कि हमारे बोर्ड का इरादा है कि जिस तरह से और जिस दर पर पंजाब के किसान को बिजली दी जाती है उसी तरह से हम देंगे। जिस तरह वहां वह 90 रूपये फी हार्स पावर के हिसाब से देते है

उसी तरह ये यहां देंगे। बिजली के बारे मे यहां पर बहुत कुछ कहा जाता है और बहुत बातें होती हैं अध्यक्ष महोदय, फरीदाबाद में थर्मल बिजली का पावर हाउस लगाना था और उसकी क्लीयरैंस पता नही कितने साल पहले भारत सरकार से मिल गई थी और बायलर का आर्डर भी बुक हो गया था लेकिन वह आर्डर कैंसल कर दिया गया। वह कारखाना गवर्नमैंट आफ इंडिया का था ओर पब्लिक सैक्टर मे लगा हुआ था। फिर दोबारा टैंडर मांगे गए और भारत सरकार के कारखाने का टैंडर 80/90 लाख रूपये सस्ता मिला। मुझे खुशी हैं कि उसी कारखाने का टैंडर बुक हो गया लेकिन नतीजा क्या हुआ ? पंजाब में बिजली का थर्मल प्लांट भटिंडा में लगना था और उसकी मंजूरी अभी तीन महीने हुए मिली है लेकिन फिर भी 10 करोड़ रूपये खर्च हो चुके है मगर यहां पर सिर्फ 40/50 लाख.....

श्री बंसी लाल : आपको पता होना चाहिए कि भटिंडा का थर्मल प्लांट बनते डेढ़ साल हो गया है।

चौधरी रणबीर सिंह : अब मै क्या कहूं ? मैं कह सकता हूं लेकिन मुख्य मंत्री जी अगर इस बारे बाहर बात कर लें तो ठीक रहेगा क्योंकि मुझे अगर इस बारे में चैंलेंज करना पड़े तो मुझको पीछे हटना अच्छा नही लेकिन इसमे सही मैं ही हूं। मैंने कहा है कि प्लानिंग कमिशन की कलायरैंस जो मिली है उसके लिए उनको वह कुछ महीने पहले मिली है लेकिन हमें कइ साल पहले मिली थी (श्री बनारसी दास गुप्ता की ओर से विघ्न) आप फिर मेरे साथ

इस बारे मे बात कर ले (विघ्न) अध्यक्ष महोदय, यह जो विघ्न हो रहे है और मेरा टाईम कभी बंसी लाल जी ले लेते है और कभी बनारसी दास जी, तो क्या यह टाईम मेरे टाईम में गिना जायेगा ?

श्री अध्यक्ष : आप चार पांच मिनट ज्यादा बोल भी चुके है और अपने टाईम से ज्यादा ले चुके है।

चौधरी रणबीर सिंह : ठीक है , तो मै अब बैठ जाता हूं।

मुख्य मंत्री (श्री बंसी लाल) : स्पीकर साहब, दो रोज से हमारे सदन मे राज्यपाल महोदय के ऐड्रैस पर बहस चल रही है और इस डिसक्शन के दौरान कई तरह की बातें आई है और मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि विरोधी दल के मैम्बरान को जिस ढंग से बाते कहनी चाहिए थी वह उन्होने नही कही। जहां सरकार का कुछ फर्ज है, इस रूलिंग पार्टी का कुछ फर्ज है वहां अपोजीशन का भी कुछ फर्ज भी होता है लेकिन अपोजीशन पार्टी वालो ने यहां पर क्या किया ? जितनी बाते कही गई, ये निहायत गैरजिम्मेदाराना, गलत और बेबुनियाद कही हैं उन्होने सबसे पहले तो एक ढोंग रचा और कहा गया कि सदन का इजलास जो बाकी दिन है चलेगा उसका वह बहिष्कार करते है। लेकिन वह भाई हर रोज पांच सात बोलते भी है, बैठे भी यहां रहते है मगर अखबारों में प्रौपेगंडा यह है कि इन्होने इजलास का बाईकाट किया हैं हाजिर यहां ही रहते है और यहां रहते हुए तिनी बाते कहते है,

बोलते है गलत और गैरजिम्मेदाराना बोलते है और कर भी क्या , इनके पास कोइ बात सरकार के खिलाफ कहने के लिए है ही नही। इन्होने चण्डीगढ़ का चर्चा किया कि इस इशू पर सरकार ने कमजोरी दिखाई और साथ मे यह भी कहा कि चीफ मिनिस्टर हवाई जहाज पर आया, लड़कों पर मुकद्दमे चलाये वगैरह वगैरह। मुझे अफसोस है कि विरोधी दल के मैं बर सदन मे ंहाजिर नही है। दलसिंह जी ने यह कहा और शायद किसी और मैंबर साहब ने भी यह बात कही है। मैं कहना चाहता हूं कि हवाई जहाज पर चीफ मिनिस्टर ही आ सकता है इनको तो साईकल ही मिलेगी, क्योंकि इनकी करतूते ही ऐसी है। यहां ये बात कहते रहे कि चंडीगढ़ हरियाणा का है लेकिन वहां अपने घरों में बैठ कर ये बाते करते रहे है कि चंडीगढ़ पंजाब को चला जाए ताकि यह सरकार टूट जाये और यह कुर्सी इनको मिल जाए। चंडीगढ़ तो पंजाब में चला गया लेकिन यह बेचारे कुर्सी के इधर–इधर चक्कर काट कर रह गये। (हंसी) जिस वक्त चंडीगढ़ का देहली में फैसला हो रहा था उस वक्त विरोधी दल के नेतागण औरयही मैंबर साहबान जो दो रोज से इस सरकार को क्रोटिसाइज करते रह है देहली में अपनी पार्टी वालों से हमारा केस प्लीड करने की बजाये हांसी, हिसार, विभानी, कैथल, करनाल और पानीपत वगैरह में मीटिंगे करके चंडीगढ़ मांग रहे थे और कह रहे थे कि चंडीगढ़ जा रहा है और उसका सौदा हो चुका है। ये तो ऐसी बाते करते थे और इनकी पार्टी जिसको यह बीलौंग करते हैं उसने आज तक किसी दिन भी, देहली सरकार ने जो हमे फाजिल्का और अबोहर

दिया है, उसका स्वागत नही किया। इनकी कांगो के सब से बड़े नेता श्री मोरारजी देसाई ने एक दिन भी हरियाणा का कलेम स्पोर्ट नही किया।

Shri S.P. Jaiswal : May I draw the attention of the House to the convention that no reference can be made to a person who is not present here, particulartly a high dignitary ?

Chaudhri Jai Singh Rathi : The Treasury Benches themselves have also mentioned the name of the Prime Minister and hav ethus made her the subject of criticism.

चौधरी दल सिंह : जब ये सरकारी बैंचों वाले हमें कहते है कि उनका नाम यहां न ले जो अपने आप को यहां डिफैंड नही कर सकते है तो फिर ये खुद क्यों हिन्दुस्तान की मायानाज हस्ती का नाम ले रहे है जो अपने आपको यहा डिफैंड नही कर सकते है ?

एक आवाज : आप भी तो नाम लेते रहे है।

चौधरी जयसिंह राठी : जब हम ने नाम हलया तो कहा गया था कि नाम नही ले सकते और चौधरी रणबीर सिंह जी ने प्वायंट आफ आर्डर पर कहा था कि उनके नाम ऐक्सपंज कर दिया जाये।

श्री बन्सी लाल : वह अफसरों के थे।

चौधरी जयसिंह राठी : वह अफसरो के नही थे।

Mr. Speaker : You know that we have already a convention this House that the names of high dignitaries, who do not belong to this House, shoul not be taken.

श्री बंसी लाल : मैं अर्ज करता हूं कि कांगो के सबसे बड़े नेता जो पहले हिन्दुस्तान के डिप्टी प्राइम मिनिस्टर थे और फायनैंस मिनिस्टर थे और इनके सबसे बड़े नेता है जो हमे क्रीटिसाइज करते है उन्होंने किसी दिन भी हरियाणा के क्लेम को स्पोर्ट नही किया और यह नही उनके बारे में मैं आपको एक और बात बताता हूं। उस समय के डिप्टी प्राइम मिनिस्टर और फायनैंस मिनिस्टर के पास मैं, हमारी फायनैंस साहिबा और हमारे प्रांत को केंद्र में रीप्रेजैंट करने वाले प्रोफैसर शेर सिंह गये और उन्होंने हमें कहा कि हम स्टेट में प्रोहिबिशन कर दे। हमने उनसे तय किया कि हम हफ्ता में दो दिन स्टेट में प्रोहिबिशन कर दे अगर वे हमारा 50 फीसदी घाटा बरदाशत करे। वे यह बात मान गये और उन्होंने कहा कि हां करेंगे और हमने कर दी। लेकिन उन्होने फाईल में उसका कोई रिकार्ड करके नही रखा और हमारी स्टेट को उससे नुक्सान हो गया। जब इनके नेताओ का यह हाल है तो इनकी क्या हालत होगी, स्पीकर साहब, यह आप देख ले ? जहां तक चंडीगढ़ का सवाल है, मैं इस बात को मानता हूं कि चंडीगढ़ हिन्दी–भाषी क्षेत्र है लेकिन नैशनल इन्ट्रैस्ट में हमने इस फैसले को माना है, जो गवर्नमैंट आफ इंडिया ने दिया है। इस फैसले को इस हाउस ने अप्रूव किया और इस प्रान्त की जनता ने अप्रूव किया। विरोधी पार्टी के माननीय सदस्यगण कहते है कि लड़कों

के ऊपर मुकद्दमें चलाए गए हैं मैं इन्हे बता देना चाहता हूं कि अगर कोई कानून का उल्लंघन करेगा, बसें जलाएगा, सरकारी प्रौपर्टी को नुक्सान पहुंचाएगा तो उस पर मुकद्दमें चलाए जाएंगे, पीछे भी चलाए है और आगे भी चलाएंगे। ला–एंड–आर्डर को पूरी तरह से कंट्रोल में रखना सरकार का फर्ज है और किसी को भी कानून को तोड़ने की इजाजत नही दी जाएगी। जहां तक पंजाब के राज्यपाल महोदय के एड्रैस का सवाल है, मैं चौधरी रणबीर सिंह जी के साथ इस बात में मुत्तफिक हूं कि उनको अपने एड्रैस मे ऐसी बात नही कहनी चाहिए थी। लेकिन जैसे चौधरी दल सिंह जी ने कहा कि चंडीगढ़ गुम कर दिया, खो दिया इसके बारे में सदन को एक बात याद दिलाना चाहता हूं। 1 नवम्बर 1966 को जिस दिन चंडीगढ़ यूनियन टैरिटरी बना, और शाह कमिशन की रिपोर्ट को इग्नौर किया गया, उस दिन चौधरी दल सिहं जी श्री भगवत दयाल की सरकार में एक मंत्री पद की शपथ ले रहे थे। जिस दिन चंडीगढ़ यूनियन टैरिटरी बनाया जा रहा था उस दिन इन्होंने नही कहा कि मैं मंत्री पद की शपथ नही लेता क्योकि चंडीगढ़ को, शाह कमिशन की रिपोर्ट इग्नौर करके, यूनियन टैरिटरी बनाया जा रहा है। इनको दर्द चंडीगढ़ जाने का नही, दर्द कुर्सी का जो नीचे से निक गई।

श्री सत्यनाराण सिंगोल : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सरं उसके बाद इस सदन के अन्दर, इन्ही चीफ मिनिस्टर साहब ने

सदन को विश्वास दिलाया था कि भगवत दयाल और राव साहब इस को खो चुके है और मैं इसको लेकर दिखाऊंगा।

श्री अध्यक्ष : यह प्वायंट आफ आर्डर नही है। (व्यवधान)

श्री बन्सी लाल : मैं तो इस बात पर भी कायम रहा। चंडीगढ़ का पांचवा हिस्सा आज भी हरियाणा को मिला हैं चंडीगढ़ का रेलवे स्टेशन हरियाणा प्रान्त को मिला, बिल्कुल खाली नही रहे और इनकी तरह कुर्सी के लिए नही पसर गये। स्पीकर साहब, सदन मे ंतरह तरह के ऐलीगेशन लगाये गये। एक सदस्य ने कहा कि हमारे मिनिस्टरों ने बीस बीस हजार रूपया लेकर मार्किट कमेटियां बनावाई। उस बेचारे सदस्य ने बीस हजान का नाम तो ले दिया लेकिन बीस हजार की शकल नही देखी। ये पांच पांच रूपये लेकर थानेदारों के पास सिफारिश करते थे और हमारे मिनिस्टरों पर बीस बाीस हजार रूपया लेने का ऐलीगेशन कैसे लगा सकते है ? अलबत्ता ये वही सदस्य हे जो हमारे मिनिस्टरों के पास लोगों से रिश्वत लेकर मैम्बर बनवाने गये और हमारे मिनिस्टर ने उनको ना करदी और उनको लोगों ने पैसा लौटाना पड़ा। और मैम्बर भी न बनवा सके। ऐसी बेबुनियाद बाते कहने से जनता खुश नही होती। जनता चाहती है काम, काम करने से जनता उनके साथ रह सकती है, फर्जी नारे लगाने से नही। इन्होने बाहर जाकर यह नारा लगाया कि हमने सैशन का बहिष्कार कर दिया लेकिन बैठे यहां रहते है।

स्पीकर साहब, 1970–71 की ऐनुवल प्लान का आउट ले 41 करोड़ 50 लाख रूपये था। स्टेट के रिसोर्सिज बढ़ने के कारण यह 49 करोड़ 19 लाख तक बढ़ गया। 1971–72 के लिए हमारा ऐनुवल प्लान आउट ले 61 करोड़ 38 लाख का है। आप अन्दाजा लगा सकते है कि हमारी कितनी अचीवमैंट है।

स्पीकर साहब, रूरल इलैक्ट्रिफिकेशन के बारे मे बहुत बाते कही गई। हरियाणा मै 6669 गांव है। प्रान्त के हर गांव मे बिजली पहुंचा दी गई है। हरियाणा सबसे पहला प्रान्त है जिसने हर गांव तक बिजली पहूंचाई हैं मुझे इस बात का रंज नही कि विरोधी पार्टी के सदस्यों ने इस चीज को क्रिटिसाईज किया क्योंकि अगर ये क्रिटिसाईज न करे तो और कौन करेगा ? हमारे इस इलैक्ट्रिफिकेशन के काम से और अन्य डिवैल्पमैंट के कामों से हमारी विराधी पार्टियों के सदस्यों को शायद ऐसा लग रहा है कि आगे वाले समय में वे असैम्बली के दरवाजे के दर्शन नही कर सकेंगे। अगर ये क्रिटिसीजम न करें तो और क्या करे ? इनका क्रिटिसीजम करना स्वाभाविक हैं।

स्पीकर साहब, इन्होंने कहा है कि बिजली का मैटीरियल खराब खरीदा गया हैं एक विरोधी पार्टी के सदस्य ने यहां कहा की फलां कम्पनी से मैटीरियल खराब खरीदा गया हैं हमने कोई मैटीरियल खराब नही खरीदा और जो खरीदा गया वह ठीक दाम पर खरीदा गया। जिस एम.एल.ए. साहब ने ये कहा, उनके बड़े भाई है जो कुछ अर्सा पहले तक इस सरकार के मुलाजिम थे। वे

चेयरमैन इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड के पीछे दो महीने तक फिरते रहे कि हमारा सामान ले लो लेकिन नही लिया गया। जब उन से सामान नही खरीदा तो सारा सामान खराब हो गया। उन्होनें इस कम्पनी में नौकरी की हुई थी और वह नौकरी भी इसी बात पर छूटी कि वे उस कम्पनी का खराब सामान बिकवा नहीं सके। हकीकत यह है कि उस मैम्बर साहब के भाई उस कम्पनी के खराब सामान को इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड को बिकवा नही सके। ये पैसे खाकर सामान बिकनाना चाहते थे। यह रिएलिटी है जो मैंने आपको बताई।

स्पीकर साहब, यह कहते हे कि बिजली की लाइनों में कई खामियां है। हमने बड़ी तेजी के साथ काम किया और जितना अच्छे से अच्छा काम हो सकता था, किया। हर गांव में बिजली दी है और यह सोलह आने सही हैं अगर इतने बड़े काम में कही कोई खामी रह गई है तो उसको दूर करेंगे और उन खामियों को दूर करने के लिए मैम्बर साहिबान सुझाव दे कि फलां खामी को इस ढंग से ठीक करे। लेकिन इन खामियों को अपने चश्में से न देखे, जनता के चश्में से देखे। ये कहते है कि बिजली की तार गावों में नही है, एक माननीय सदस्य कहते है कि चीफ मिनिस्टर तारों को हाथ लगा कर देख ले। ठीक है, मैंने तो तारों में बिजली छोड़ रखी हैं आप हाथ लगाकर देख लें कि बिजली है या नही। अगर आपको खाली लगती है तो हाथ लगा कर देख लों स्पीकर साहब, इनका बेबुनियाद क्रिटिसीजम है, इससे इनको कुछ मिने वाला नही है। इस समय तक हमने 83 हजार ट्यूबवैलज

स्टेट तक पहूंच जाएगी। इसके अतिरिक्त प्रान्त में बिजली की टोटल कंजम्पशन मे ंसे 42 फीसदी बिजली एग्रीकल्चर पर्पजिज पर खच्र होगी जो कि सारे कंट्री में हाईएस्ट है। चौधरी रणबीर सिंह ने कहा था कि थर्मल प्लांट की मंजूरी बहुत पहले से आ गई थी लेकिन काम शुरू नही हुआ हैं ऐसा नही है, काम शुरू कर रखा हैं और जल्दी ही बनकर तैयार हो जाएगा। मगर चौधरी साहब को शायद यह ख्याल रहा हो कि जब मंजूरी आ जाती है तो उसका सारे का सारा रूपया सैंट्रल गवर्नमैंट दे देती है, ऐसी बात नही हैं सैंट्रल गवर्ननमैंट जो अपना कोई प्लांट लगाती है। उसका पेसा वह खुद देती है। अगर स्टेट कोई अपना इलैक्ट्रिसिटी प्लांट लगाने की मंजूरी दे तो सैंट्रल गवर्नमैंट के अपने कुछ नियम होते है जिनके हिसाब से 'एड' मिलती है यह नही कि सैंट–परसैंट पेसा मिलता हो। इसके अलावा हम प्रांत की बिजली की कमी को पूरा करने के लिए सैंट्रल गवर्नमैंट के साथ चार सौ मैगावाट का एक न्यूक्लीयर पावर स्टेशन जगाधरी में लगाने के लिए बातचीत और खतोकिताब कर रहे है और इसके साथ ही साथ गवर्नमैंट आफ इंडिया से बदरपुर थर्मल स्टेशन और रानी प्रताप सागर ऐटौमिक पावर प्लांट, जो कोटला में है, से बिजली लेने के लिए अनुरोध किया है और हमें आशा है कि हमे जल्दी बिजली मिलेगी।

स्पीकर साहब, पिछले साल जो हमने डिवैल्पमैंट का काम ज्यादा किया इसमे ंहमें सैन्ट्रल गवर्नमैंट से भी सहायता मिली लेकिन साथ ही साथ हमारे अपने साधन भी बढ़े और उनमे ंसे

एक बहुत अच्छा कंट्रिब्यूशन स्माल सेविंग्ज का था। स्माल सेविंग्ज में 1969–70 में 809 लाख 25 हजार रूपए इकट्ठे हुए जबकि 1967–68 मै केवल 342 लाख 49 हजार रूपए ही इकट्ठे हुए थे। ग्रौस कुलैक्शन में हमारी स्टेट हिन्दुस्तान मे दूसरे नम्बर पर है और पर कैपिटा इनवैसटेमैन्ट मे एक नम्बर पर हैं फर्टिलाईजर कंजम्पशन 1969–70 में दो लाख सत्तर हजार टन थी जबकि 1970–71 में यह कंजपशन के प्रोग्राम के अंडर जो जमीन पहले हुई थी वह 6.2 लाख हैक्टेयर थी लेकिन इस साल यह बढ़ कर 8.8 लाख हैक्टेयर हो गई। यह एक बहुत बड़ी अचीवमैंट है। स्पीकर साहब, एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हमारी फरवरी, 1970 मे वजूद में आई थी और उसके बाद बड़ी तेजी के साथ हमारी यह यूनिवर्सिटी आगे बढ़ रही है। हमारी एग्रीकल्चर यूयनिवर्सिटी ने रिसर्च का काम भी शुरू कर दिया है और दूसरी जगहों जैसे गुड़गांव, यमुनानगर, करनाल और रोहतक में ऐक्सपैरिमैंट स्टेशन भी कायम किए है और कुछ नई वैराईटीज की फसलें ईजाद की है। जहां तक किसानों और मुजारोंु की जमीनों का सवाल है, हमने पूरी स्टेट मे पास बुक सिस्टम इंट्रोडयूस कर दिया है जिससे कम से कम लिटिगेशन होगी। अब न मुजारों को ज्यादा शिकायत होगी और न मालिक को ज्यादा शिकायत होगी।

इरीगेशन के बारे मे , स्पीकर साहब, बहुत कुछ कहा गया । जुई कैनाल ओर लोहारू कैनाल की बड़ी चर्चा की गई है। चौधरी दलसिंह जी ने बड़े जोर से कल सदन में कहा कि 60

परसैंट पानी अकेले हिसार को जाता है और 40 परसैंट सारी स्टेट को। स्पीकर साहब, अगर एक आदमी गलत बात कहने लग जाए और जिसने प्रण कर रखा हो कि सही बात कहनी ही नही उस आदी की बात का मैं क्या जवाब दू ? यह बात कि 60 परसैंट पानी अकेले हिसार में जाता है और 40 परसैंट में बाकी पूरी स्टेट आ जाती है। इस स्टेट मे किस इलाके को कितना पानी किस परसैंटज से जाना चाहये यह बात तय हुई है और उसी हिसाब से पानी गया हैं किसी इलाकें का एक क्यूसिक पानी काट कर दूसरे इलाके को दिया गया हैं चौधरी साहब, हमारे प्रान्त में एक मिसाल है, ''बिल्ली के भागों छिक्का टूट गया''। एक बार चौधरी दल सिंह के भाग से भी छिक्का टूट गया था और ये चार, साढ़े चार महीने के लिए वजीर बन गये थे गलती से। (हंसी) गलती पडित भगवत दयाल की थी।

Shri S.P. Jaiswal : On a point opf order, Sir. A reference cannot be made to a person who is not a member of this House.

श्री अध्यक्ष : कोई खराब लफ्ज तो उनके बारे मे नही कहा गया ?

श्री एस.पी. जयसवाल : 'उनकी गलती है' This is an allegation.

चौधरी जयसिंह राठी : गलती से तो उन्होने आपको भी चीफ मिनिस्टर बना दिया था।

Mr. Speaker : You please carry on.

श्री बंसी लाल : तो स्पीकर साहब, मै अर्ज कर रहा था कि गलती से ये मिनिस्टर बन गए और इनके पास इरीगेशन एंड पावर का महकमा था। उस वक्त इन्होंने अपने हल्क में नाजायज पानी चलाया और एक बार फिर मैम्बर बन गए। अब की बार फिर इन्होंने नारा लगाया कि मैं जाकर इरीगेशन एंड पावर मिनिस्टर बनूंगा और आपको मालामाल कर दूंगा। स्पीकर साहब, धोखे की बात एक बार तो चल सकती हैं मगर बार बार नही चलती । अब इनको पता है कि दोबारा ये इस सदन में चुन कर आने वाले नही। इन्होने जुई कैनाल का जिक्र किया। जुई कैनाल का पानी बनाई और हमें इस बात का फक्र है मगर जुई कैनाल हमने किसी का पानी काट कर नही बनाई। जुई कैनाल में पानी चलेगा सिर्फ तब जब यमुना नदी में बाढ़ आयेगी। केवल बाढ़ का पानी इसमें जाएगा। वह पैरीनियल कैनाल नही है। ये तो लोगों को गुमराह करना चाहते है और चाहते है कि ऐसा कह कर शायद इलैक्शन में कोई स्टंट चल जाए लेकिन इनको पता होना चाहए कि आज की जनता इतनी भोली नही रह गई कि वह इनकी बातों में फंस जाएं। (विघ्न) तो स्पीकर साहब, जुई कैनाल बनाकर हमने बहुत अचीवमैन्ट हासिल की है और एक बहुत अच्छा काम किया है। सारी स्टेट में इसका अच्छा असर है। इसी तरह से लोहारू कैनाल के बारे मे भी चाहे ये कितनी बाते कहे, कितनी नुक्ताचीनी करें और झज्जर तहसील में ज्यादा पैसा खर्च हो गया। स्पीकर साहब, मैं एक बात अर्ज करना चाहता हूं कि जितने इलाके बैकवर्ड है,

चाहे वह भिवानी तहसील हो, चाहे जिला हिसार हो, चाहे अम्बाला जिले का नारायणगढ़ और मोरनी का इलाका हो या कालका का इलाका हो, हम इन पर दिल खोलकर पैसा खर्च करेंगे और किसी इलाके को बैकवर्ड है हम उन पर ज्यादा पैसा खर्च करेंगे। इसमें हमें कोई झिझक की बात नही। जिस ड्रेम का नाम करनाल और रोहत जिले में ड्रेम जिले में ड्रेन नम्बर 8 पड़ता हैं और जिसमें साल में ज्यादातर 30–40 दिन और बाजआकात 50–60 दिन पानी चलता है इसी ड्रेन न्म्बर 8 का नाम दादरी के इलाके में लौहारू कैनाल रखा गया है। यह कैनाल पूरी दादरी तहसील, महेन्द्रगढ़ तहसील के कुछ गांव और पूरी लोहारू तहसील को पानी देगी। एक तरफ तो जो इलाका पानी से तबाह होता हैं उसको हमने बचाया है और दूसरी तरफ जिस इलाके में कभी भी पानी नही होता, बारिश नही होती, सालो साल तक कहत पड़ता है उसे कहत से बचाने की कोशिश की हैं माननीय सदस्यगण अपोजीशन बैंचिज से चाहे कितने ही जोर से कहत रह कि वहा पैसा लग रहा है, यह हो रहा है और वह हो रहा है, हम पेसा दिल खोल कर लगायेंगे और उनके रोकने से रूकेंगे नही क्योकि हम अच्छा काम कर रहे हैं और जायज काम कर रहे हैं । लोहारू कैनाल और जुई कैनाल न सिर्फ हिन्दुस्तान मे बल्कि एशिया में भी अपनी किस्म की ये दो ही नहरें है जहां इतने ऊंचे लिफ्ट देकर पानी ले जाया गया है। जुई कैनाल 108 फुट ऊंचा और लोहारू कैनाल मैं 220 फुट ऊंचा जमीन से पानी उठेगां बजाए इसके कि विरोधी दल के मैम्बर यह कहते कि सरकार ने अच्छा काम किया है इन्होन इस

काम को भी क्रिटिसाईज किया है। मुझे अफसोस होता है कि किसी गरीब की हालत सुधरने पर भी हमारे साथी खुश नही होते है, उनको जलन पैदा होती है और वह क्यों न हो बेचाने जाने है कि उनकी पोलिटिकल पावर हमेशा उम्र भर नही मिलेगी।

स्पीकर साहब, पिछले साल वैस्ट्रन जमुना कैनान मै क्रैश प्रोग्राम चालू किया था उसकी डिसीलटिंग के लिए और उसकी री–मौडलिंग के लिए हमने उसको पूरी तरह से मुकम्मल किया । उस काम को कम्पलीट करने की वजह से और ऐक्सट्रा टयूबवैल्ज की औगमेन्टेशन की वजह से हमने अढ़ाइ लाख एकड़ जमीन को पहले सालों की अपेक्षा अधिक सैराब किया था।

स्पीकर साहब, जहां चौधरी दल सिंह जी ने यह कहा कि सारा पेसा लुहारू, भिवानी, तोशाम या महेन्द्रगढ़ में खर्च कर दिया वहां उन्हौंने यह नही कहा कि जींद में एक मिल्क प्लान्ट भी लगाया है और एक टैनरी भी जीन्द में लगाने जा रहे है। हम जीन्द के इलाके को भूलकर नही चलना चाहते। हमारे लिए तो ऐसा ही जीन्द है, ऐसाही गुड़गांव, ऐसा ही हिसार और ऐसा ही अम्बाला डिस्ट्रिक्ट है।

श्री अध्यक्ष : जीन्द में एक कालेज भी बना दिया गया है।

श्री बंसी लाल : जी हां, एक कोलेज भी बना दिया और भी काफी काम किया हैं वहां पर हौसपिटल भी बन रहा है। अगर

चोधरी दलसिंह जी को हाई ब्लड प्रैशर है तो इनके लिए वहां बढ़िया बढ़िया इंस्ट्रमैंट भेजेंगे,

चौधरी जयसिंह राठी : उसे बिलिंगटन अस्पताल न बना देना।

श्री बन्सी लाल : हम तो उससे भी बढ़िया हस्पताल वहां बनायेंगे।

स्पीकर साहब, मैं ट्रांसपोर्ट डिपार्टमैंट के विषय मे इस सदन मे बड़े फक्र के साथ यह बताना चाहता हूं कि सारे हिन्दुस्तान मे हमारी ट्रांसपोर्ट नम्बर एक पर हैं हमारे जेसी ट्रांसपोर्ट की सर्विस कही सारे हिन्दुस्तान भर में नही है। मई सन् 1968 में हमारे पास 578 गाड़ियां थी मगर 31 मार्च, 1971 तक 1100 गाड़ियों हो जाएगी। सदन को यह जान कर भी अत्यन्त हर्ष होना चाहिए कि हमने 83.2 प्रतिशत रूटों पर अपनी गाड़ियों चालू कर रखी है अर्थात् इनको नेशनेलाइज कर दिया है। अब जो कुछ 17 परसैंट रूट बचते है उनको भी जल्दी ही नैशनेलाइज करना चाहते है। हमारा 1969–70 का नैट प्रौफिट 102 लाख और 23 हजार रूपये था यह प्रौफिट 1970–71 मे पहले आठ महीनों के अन्दर 140.26 लाख हुआ। स्पीकर साहब, 1968–69 मैं रोडवेज का फी माइल प्रौफिट 34 पैसे था परन्तु अब 70.71 में यह 60 पैसे फी माईल हो गया है। इतना मुनाफा हिन्दुस्तान की किसी भी

अन्डरटेकिंग का नही है। हमारा प्रौफिट सारे हिन्दुस्तान मे सब से ऊंचा हैं

इसी प्रकार से आप सड़कों के विषय में देखे। हमने 68–69 मे 352 किलोमीटर सड़के बनायी, 69–70 मे 981 किलोमीटर सड़के बनायी और चालू साल मे हम कम से कम दो हजार किलोमीटर सड़के बनायेंगे। सदन को में यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि मार्च 1973 तक हमारी सरकार इस प्रांत का कोई गांव बगैर पक्की सड़क के नही छोड़ेगे (प्रशंसा)। अगर विरोधी दल के भाई इस सरकार को क्रिटिसाईज न करे किस को करेंगे। क्योंकि जैसे जैसे हमारी सड़के बनेंगी इनके वोट साफ और हाथ ही ये भी साफ हो जायेंगे।

श्री अध्यक्ष : मार्च की बजाए आप इन्हे जनवरी तक पूरा कर देना।

श्री बंसी लाल : जितना जल्दी आप करने का सुझाव देंगे उतना ही जल्दी आप करने का सुझाव देंगे उतना ही जल्दी हम कर देंगे। अब स्पीकर साहब, ये बाते इनके कलेजे को बैठा रही है। इन को घबराना नही चाहिए। हम इन के लिए हस्पताल भी एक अच्छा सा बनवायेंगे क्योकि इस डिवेल्पमेंट से इनके दिल दहकते है। हमें इनके हार्ट के लिए भी बढ़िया से सामान का इन्तजाम करना पड़ेगा।

स्पीकर साहब, ऐजुकेशन के सिलसिले मे भी हमने बहुत काम किया है।

श्री अध्यक्ष : चौधरी लाल सिंह कोई प्वायंट आफ आर्डर उठाना चाहते है।

श्री बंसी लाल : चौधरी लाल सिंह का तो यही प्वांयट आफ आर्डर होगा कि जो दूसरा सामन मंगा रहे हो उसके साथ साथ डाक्टर विद्यासागर वाला सामान भी मंगा दे।

मैं शिक्षा के विषय मे अर्ज कर रहा था कि हमने 51 प्राईमरी स्कूल खोले है और 191 प्राइमरी स्कूलो 1970–71 में अपग्रेड किया है। हमने तीन नये कालेज भी खोले है। एक कालका मे और दूसरा राई में और तीसरा बहादूरगढ़ मे।

हस्पतालो के विषय में चौधरी दलसिंह बड़ा जोर दे रहे थे कि रोहत मैडिकल कोलज में अच्छा प्रबन्ध नही है। मैं यह मानने से इन्कार नही करता और हो सकता है कि किसी बात में अच्छा प्रबंध न हो। वैसे मेरा ख्याल है कि हमारा मैडिकल कालेज और मैडिकल कालेजों के हस्पतालों से अच्छा हस्पताल है और कालेज भी अच्छे कालेजों में से एक हैं स्पीकर साहब, आपको यह जानकर अत्यन्त हष्र होगा कि हमारा इरादा है। कि इगले दो–सालों के अन्दर रोहतक मैडिकल कालेज हिन्दुस्तान में नम्बर एक पर हों। हम इस कालेज पर अगले साल डैढ़–दो करोड़ रूपया खर्च करने जा रहे है। मैं चौधरी दलसिंह जी को विश्वास

दिलाता हूं कि हतस दिन वे बीमार हो कर वहां जायेंगे हम उनकी कोई भी बीमारी नही छोड़ेंगे। हा पौलिटिकल बीमारी का तो हमारे पास कोई इलाज है नही।

चौधरी जयसिंह राठी : आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। स्पीकर साहब, जब हम तकरीर करते है तो चीफ मिनिस्टर साहब कहते है कि बोलना नही आता लेकिन अब आप ही देखें कि उनके दिमाग की इख्तरा यह है कि एक मैम्बर को बीमार ही देखना चाहते है।

श्री अध्यक्ष : यह प्वायंट आफ आर्डर क्या हुआ ?

श्री बंसी लाल : स्पीकर साहब, मै इनको बीमार देखना नही चाहता लेकिन हकीकत यह है कि इनको मैंटल डिजीज है।

चौधरी जयसिंह राठी : रोहतक में तो मेंटल डिजीज वार्ड भी नही है।

श्री बंसी लाल : वह भी बना रहे है। उस वार्ड में हमारी पार्टी से कोई नही जायेगा। वह भी इन भाईयों के लिए ही होगा।

स्पीकर साहब, इस साल कई हस्पतालों की बिल्डिंज बनानी शुरू की है। इस साल 400 बैडज बढ़ायेंगे। हम चाहते है कि हर सबडिवीजन में हैडक्वार्टर पर एक अच्छा अस्पताल हो। वहां पर एक्सपर्ट और स्पेशलिस्ट हो ताकि लोगों को कोई दिक्कत ने पेश आये ंजितने भी बैक्वर्ड ऐरिया है उनमें हस्पताल

हम पहले बना रहे है। मैडिकल ऐड के विषय में तो हम अगले दो तीन सालो मे यह चाहते हे कि इतना अच्छा प्रबन्ध किया जाये कि किसी गरीब आदमी को कोई शिकायत ही न रहे। मैं यह मानता हूं कि इस वक्त हमारी स्टेट में मैडिकल ऐड की कमजोरी रही है लेकिन अब तेजी के साथ सुधार रहे है। हम करनौल में नया हस्पताल बनवा रहे है, फिरोजपुर झिरके में बना रहे है। नुह में, बना रहे है, गुड़गांव में, भिवानी मे, तोषाम में, कैथल मे, पानीपत में कहने का मतलब यह है कि हमारी तरफ से ज्यादा से ज्यादा जगहों पर अच्छे से अच्छे हस्पताल बनाने की कोशिश की जा रही हैं चौधरी दलसिंह के जिले जींद में भी नये हस्पताल का काम शुरू होने वाला है। इधर झज्जर में भी काम शुरू हो गया है।

श्री सत्य नारायण सिंगोल : वहां तो अभी जमीन भी नही ली गई।

श्री बंसी लाल : मैं सिंगोल साहब की बात को न नही करता जमीन के बारे में कुछ झगड़ा रहा है। एक बार तो जमीन डिप्रैशन में आ गई थी और दूसी बार बाबा जी का मठ आ गया था। But we are trying to do our best to construct that hospital as early as possible.

स्पीकर साहब, पीने के पानी की तकलीफ अभी तक बहुत रही है और पीने के पानी के बारे मे हमने देहातो मे खासा पानी सप्लाई करने की कोशिश की। पिछले साल हमने एक करोड़ रूपया रूरल वाटर स्पलाई पर खर्च कियां 1970–71 में यह दो

करोड़ 40 लाख रूपया कर दिया जिससे 145 गांव और 5 नए कस्बों को पानी मिलेगा और दिन प्रतिदिन उनको हम बढ़ाने की कोशिश कर रहे है। स्पीकर साहब, हमारे प्रान्त में म्यूनिसपैल्टियों की हालत बहुत अच्छी नही। गरीबों के मुहल्ले, हरिजनों के मुहल्ले और ड्रेन्ज वगैरह की हालत बड़ी खराब रही है। इस चालू साल में हमने 8 लाख रूपये की ग्रांट म्यूनिसपैल्टियों को हरिजनों के मुहल्ले पक्के करने के लिए, पीने के पनी की सप्लाई के लिए तथा ड्रेन्स की मेन्टेनेंस करने के लिए दी है और जो अगला साल आयेगा उसमें 8 लाख की बजाय 20 लाख रूपये देने का प्रोविजन हैं यह हमने नये सिस्टम चालू किए है। आज से पहले यह बात ने कभी सोची गई थी और न कभी की गई थी।

स्पीकर साहब, शैडयूल्ड कास्टस और बैकवर्ड क्लासिज की वैलफेयर के लिए अगले साल मे हमने 99 लाख 95 हजार रूपये यानी एक करोड़ के करीब का प्रोविजन रखा ह। यह रूपया खर्च होगा इनके बच्चों को सकालरशिप देने पर, बच्चों की तालीम पर और एग्रीकल्चरल इम्पलीमैंटस खरीदने पर सबसिडी देने, और उनके मकान बनाने में सबसिडी देने पर। पिछले सालो पर खर्च की गई रकम से यह रकम से यह रकम कही ज्यादा हैं स्पीकर साहब, फलड हमारे प्रान्त में बहुत आते रहे है। लेकिन अब हम पिछले दो अढ़ाई सालों से बड़ी तेजी के साथ फलडज को रोकने की कोशिश कर रहे है। पहले हमने कैथल ड्रेन इस तर बनाई। अब पुडरी ड्रेन पर काम कर रहे है। इसी तरह गुड़गांव में लंडोहा

नाला बहुत नुकसान करता था। पिछले साल रिकार्ड टाईम में हमारे इंजीनियर्ज ने 25 लाख रूपये की लागत से आरोली बांध 6 मील लम्बा बनाया जिससे उस इलाके में फलड पर पूरा कन्ट्रोल हुआ हैं गुड़गांव जिले में कनमेड़ा में दूसरे बांध पर काम शुरू कर दिया है। रोहतक जिले का और जीन्द का जो लो लाईंग एरिया है उसको फलडज से छुटकारा दिलाने के लिए 60 लाख रूपये की स्कीम पूर हो गई है।

स्पीकर साहब इस बार हमने एक नई बात और की है। कुदरत किसी के काबू मे नही आई, इन्सान की सडन डैथ भी हो सकती है। तो हमारे जो सरकारी मुलाजिम है, भगवान ऐसान करे कि किसी की सडन डैथ हो जाये, उनके लिए हमने कुछ इस प्रकार ऐक्सट्रा आर्डनरी रिलीफ देने के लिए तय किया है। यदि किसी सरकारी मुलाजिम की सडन डैथ हो जाए तो दस महीने की तनख्वाह, अगर वह तनख्वाह पांच हजार से कम है तो मिनिमम पांच हजार रूपये और मैक्सीमम 15 हजार रूपये सरकार उस कर्मचारी के परिवार को देगी और अगर वह सरकारी मकान मे रहा रहा है तो एक साल तक उस के बच्चें उस मकान को रिटेन कर सकेंगे और उसके कुटम्ब के एक या दो मैम्बर जो नौकरी करने के लायक होंगे उनको नौकरी देंगे, अगर उस के लिए रूल्ज मे रिलैक्सेशन भी करनी पड़ी तो करेगे।

स्पीकर साहब, ला एन्ड आर्डर के बारे बहुत कुछ कहा गया है। चौधरी दलसिंह जी ने और राठी साहब ने कल काफी

कहा कि ला एन्ड आर्डरकी सिचुऐसन इस प्रान्त मे खराब नही है अलबत्ता यह कहने वाले सदस्यगण चाहते है कि उसे खराब किया जाये मगर हम उन्हे ऐसा करने नही देगे। इन्होने क्या किया है ? एक मैम्बर तो कहते है कि वहां कत्ल हो हो गया और दूसरे कहते है कि वहां कत्ल हो गया जबकि असलियत कुछ और ही होती है। कल मैंने डी.सी. और एस.पी. से भी टैलीफोन करके पुछा। जीन्द जिन्द जिले में केवल एक ऐसा कत्ल है जो अभी तक अनट्रस्ड है, बाकी सभी मर्डर ट्रेसड है और उनके कलप्रिटस गिरफतार है गये है और उनके ऊपर केसिज चल रहे है। मुझे नही पता आनरेबल मैम्बर शायद किसी मरने वाले को यह समझते है कि यह कत्ल हो गया, ये इलजाम इनके बेबुनियाद और गलत है, इनमे कोई सदाकत या सच्चाई नही है। यह इलजाम अलटीरियर मोटिव से लगाये गये है। ये बाइकाट करके जाने वाले सदस्यगण यहां बैठकर इलजाम लगाते है और समझते है कि शायद जनता को ये भड़का सकेंगे लेकिन जनता इन चीजों से भड़केगी नही। हमारे यहां ला एंड आर्डर की सिचुऐशन देश मे सबसे अच्छी है। (सरकारी बैंचों की तरफ से प्रशंसा) कोई भी अगर यह चाहे कि हम आफिसर्ज को बुली करले या एम.एल.ए. होने के नाते आफिसर्ज पर रोब गांठ लेंगे तो हम ऐसा नही होने देंगे। इस प्रांत की सर्विसिज के ऊपर हमें फक्र है। हमारे प्रांत की सर्विसिज बहुत अच्छी हैं यह डिवैलपमैंट का इतना बड़ा काम, ला एंड आर्डर की इतनी अच्छी मेंटीनैंस, ये इस बात का सबूत हैं इनका मौरेल बड़ा हाई है। ये भाई यदि यह चाहे कि इनके मौरेल को डाउन

रके तो यह सरकार इनको ऐसा नही करने देगी। स्पीकर साहब अढ़ाई तीन साल पहले जब मैं चीफ मिनिस्टर बना तो इस असैम्बली के सदस्य ने आठ दस पेज का एक सुझाव मुझे दिया कि राज्य कैसे चलया जाये और उसके नीचे दस्तखत भी किये हुए थे उसने यह लिखा था कि मेरा एक भाई मुलाजिमत करता है, लेकिन स्पीकर साहब वह बिल्कुल इनकम्पीटैंट मुलाजिम था। सरकार को उस भाई के लिये लिखा कि उसको एग्रीकल्चर कमिशनर भी बना दो, एग्रीकल्चर सैक्रटरी भी बना दो, यह अख्तियार भी दे दो, वह अख्तियार भी दे दो, ट्रैक्टरों का अख्तियार भी उसको दे दो। ट्रैक्टरों की डिस्ट्रीब्यूसन उसके जिम्मे थी। उसने ट्रैक्टरों की डिस्ट्रीब्यूशन में इतना बडा स्कैन्डल किया कि असैम्बली मे उसके बारे मे सवाल आया कि ट्रैक्टरों की डिस्ट्रीब्यूसन में गड़बड़ी हुई है, अलबत्ता वह दुकान हमने उनकी जरूर बन्द कर दी थी और यह बन्द करनी जरूरी भी थी।

समाज कल्याण मंत्री (सूबेदार प्रभुसिंह) : वही तो खराब काम किया।

श्री बंसी लाल : और फिर स्पीकर साहब, यहां पर कुरप्शन की बात की गई, अच्छा हो यदि वह कुरप्शन की बात न करे। ट्रैक्टर बेचने वाला कुटुम्ब तो एक था और उसके पीछे रिश्वत खाले वाले 4 आदमी थे। ये कुरप्शन की रूक रूक कर बाते करते है। यह तो इसलिये याद आती है क्योकि ये खुद खाते रहे है। मैं यह बिल्कुल नही कहता कि प्रान्त मे कही भी कुरप्शन

नही है। लेकिन अगर कही कुरप्शन है तो कुरप्ट आदमी को पकड़वाने वाले आगे आये, सरकार को मिसाल दें, सरकार उनके खिलाफ एक्शन लेगी। अगर कभी कम से कम कुरप्शन की बात हरियाणा के इतिहास मे हुई है तो मौजूदा सरकार के वक्त में । स्पीकर साहब, मैं आपको सुना रहा था और हमारे होम मिनिस्टर साहब ने भी बताया कि मैम्बर साहब किस तरह से अफसरों को धमकाने की कोशिश करते है। मेरे से डिप्टी कमिश्नर और एस.पी. ने एक दफा नही दस बार कहा कि वह मैम्बर आफिसर्ज को बुल्ली करने की कोशिश करते है। मैंने उनसे कहा कि यदि वे कानून और कायदे के खिलाफ ज्यादा आगे बढ़े तो कानूनी कदम उठाओ, डरने की कोई जरूरत नही है। यह बात ठीक है कि ला एंड आर्डर उनके हिसाब से खराब है लेकिन ला एंड आर्डर कानून और कायदे के हिसाब से टौप पर हैं स्पीकर साहब, हमारे प्रान्त की डिवैल्पमैंट का एक और सबूत हैं 1968–69 मे हमारे प्रान्त की परकैपिटा इंकम 342 रूपये थी और 1969–70 मे वह बढ़कर 430 रूपये हे गइ यानी हामरे प्रान्त मे 26 प्रतिशत पर कैपिटा इंकम मे इन्क्रीज हुई जबकि सारे कन्ट्री में 13.1 प्रतिशत इन्क्रीज हुई हैं यह हमारी डिवैल्पमैंट का बहुत बड़ा सबूत हैं यहां पर एक सदस्य ने यह भी कहा कि यूनिवर्सिटी में वाइस चांसलर ऐसा आदमी लगा दिया गया जिसको कि कोई तजरूबा नही है। अलबत्ता यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर साहब को माननीय सदस्य, जैसा तजरूबा चाहते है, वैसा नही है और जैसी इनकी आदत है, वह भी नही है। मैं आपकों बता दूं कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी के जो वाइस चांसलर है, वह

12 साल पहले ला कालेज के प्रिंसिपल रहे है, उसके बाद असम हाई कोर्ट के जज रहे और उसके बाद असम हाईकोट के ही चीफ जस्टिस रहे है। इससे ज्यादा क्या कवालिफिकेशन हो सकती है ? फिर ता`वही क्वालिफिकेशन हो सकती है जो उन माननीय सदस्य या उनके अड़ौस–पड़ौस के भाईयों की है और ऐसी क्वालिफिकेशन का आदमी हमें वहां नही चाहिए। एक माननीय सदस्य यहां बहुत कुछ कह रहे थे। हमें इन्कम टैक्स के कानून सिखाने की कोशिश कर रह थे, हमें इन्कम टैक्स के कानून सिखाने की कोशिश कर रहे थे, खासी बाते करने की कोशिश कर रहे थे मगर मै उनको यह बता देना चाहता हूं कि हम उनसे अच्छा कानून जानते है, उनसे अच्छे कायदे और जाब्ते मे रहना जानते है। हम उनसे ज्यादा अच्छी तरह हर बात को समझने की शक्ति रखते है।

स्पीकर साहब, अब की बार मैं माननीय सदस्य का नाम लेकर एक चीज कहूंगा। इस सदन के माननीय सदस्य चौधरी जयसिंह राठी आज सरकार पर और सरकार के वजीरों पर तरह तरह के लांछन लगा रहे थे, एक दफा इनके भाई ने किसी केस के बारे मे हाई कोर्ट मे रिट कर रखी थी और वह रिट दिन मं सवेरे ग्यारह या साढ़े ग्यारह बजे डिसमिस हो गई। वहां से आकर अपनी हैंड–राइटिंग में एक एप्लीकेशन लिखकर इन्होंने मुझे दी जिसमें इन्होने अपने भाई के खुद दस्तखत किए और मेरे से यह कहकर कि हमारा यह केस हाई कोर्ट मे पैंडिंग है, स्ट–आर्डर ले

गये जबकि इनकी रिट डिसमिस हो चुकी थी। मैं उसी रोज दौरे पर चला गया और जब मुझे आकर यह पता लगा कि उनकी तो रिट डिसमिस हो चुकी थी, तो मैंने उसी वक्त स्टे–आर्डर वैकेट कर दिया, इतने तो ये सच्चे है। यह चीज फाईल पर है, रिकार्ड में इस वक्त भी मौजूद है।

Chaudhri Jai Singh Rathi : Mr. Speaker, I would like to give personal explanation.

Mr. Speaker : Not now, but later.

श्री बंसी लाल : बिजली और पुलिस के महकमें के बारे मे मैंने बताया ही है मैं तो, स्पीकर साहब, आपकों सारी फैक्टस पर आधारित बाते बता रहा हूं। यह सब जो विरोधी दलों के सदस्यों ने सरकार के खिलाफ कहीं सब वे गलत और बेबुनियाद है। हकीकत यह है कि जितना काम आज इस स्टेट के अन्दर डिवैल्पमैंट का हो रहा है, उतना हमारे हिन्दुस्तान में कही भी नही हो रहा । हमारे प्रान्त के अन्दर पिछले अढ़ाई–पौने तीन सालों में जितनी तेजी से डिवैल्पमैंट का काम हुआ है, वह आजादी से लेकरआज तक कभी भी नही हुआ। जनता भी इस बात को तसलीम करती है। यदि यह विरोधी दल वाले इस किस्म के गलत इल्जाम लगाये, तो इसका तो किसी के पास भी कोई इलाज नही है।

इन शब्दों के साथ मैं सदन से प्रार्थना करूंगा कि ''मोशन आफ थैंक्स'' को एडौप्ट किया जाये और गवर्नर साहब को कन्वे किया जाये।

PERSONAL EXPLANATIONS

BY—

(i) Chaudhri Dal Singh &

(ii) Chaudhri Jai Singh Rathi

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, चीफ मिनिस्टर साहब ने मेरा नाम बार–बार लिया है और कुछ बातें कही है इसलिए मैं भी कुछ देर के लिए बोलना चाहूंगा।

श्री बन्सी लाल : स्पीकर साहब, आज तो इनके पेट मे दर्द होना शुरू हो गया कल तो मेरा नाम भी बार–बार लिया गया था।

चौधरी दल सिंह : बार–बार नाम लेने का शायद इनको फोबिया हो गया है।

श्री बंसी लाल : कोई बात नही, हो जाने दो। (विघ्न)...

चौधरी दल सिंह : (जुलाना) स्पीकर साहब, मुख्य मंत्री जी ने चंडीगढ़ का जिक्र करते हुए वर्ष 1966 का हवाला दिया। ऐसा कहने की भी एक वजह है। सैंटर मे उस वक्त भी वही

सरकार थी जो वहां पर आज है और जिसके ये चमचे है। उसी भारतवर्ष की सरकार ने यह आश्वासन दिया था कि हमने चंडीगढ़ बतौर अमानत अपने पास रखा हुआ है, जिस वक्त हरियाणा की अपनी सरकार बन जाएगी तो यह चंडीगढ़ हरियाणा का होगा....

(विघ्न)

श्री बनारसी दास गुप्ता : बिल्कुल गलत। कोई एशयोरेन्स नही दी थी....

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, बच्चों का खूनतो इंहोने किया है कि 1966 में भारत सरकार ने यह आश्वासन दिया था कि जब हरियाणा की अपनी सरकार बनेगी तो चंडिगढ़ हरियाणा का होगा, यह बात बिल्कुल बेबुनियाद और बिल्कुल गलत है। न तो कभी भारत सरकार ने इस बारे में कोई आश्वासन ही दिया था और न ही कभी यहां पर 4 महीने और 13 दिन रहने वाली सरकार ने भारत सरकार को दो लाइनों की चिट्ठी लिखी कि चंडीगढ़ हमारा है। कागज और फाईलें हमारे पास है, उनमें कही कोई इन्होने चिट्ठी नही लिखी कि चंडीगढ़ हमारा है।

चौधरी दल सिंह : उस वक्त भी हम मे से आधे लोग सदन के मैम्बर होते थे। उस वक्त भी हमारे होम मिनिस्टर वही थे, जो इस वक्त है...

श्री बंसी लाल : उसी होम मिनिस्टर ने आपकी खातिर हरियाणा बना दिया। मैंने भी दस्तखत किये थे कि हरियाणा बना दो.... (विघ्न)

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब, मुझे बहुत अफसोस है कि हमारे हाउस के नेता और मुख्य मंत्री बार बार उठकर इन्ट्रपट कर रहे हैं यदि वे समझते है कि हमने गलत बात कही है, तो कम से कम उसको आराम से सुनें। मैं तो एक मामूली एम.एल.ए. हूं लेकिन वह तो लीडर आफ दी हाउस है और हरियाणा के चीफ मिनिस्टर हैं यहद वह समझते है कि हम गलत बात कहते है तो वे उन्हे अपने दिमाग मे रखे और बाद मे जवाब दें। चंडीगढ़ का फैसला होने के बाद इन्हौने कोइ स्टेटमैंट नही दी कि यह फैसला गलत हुआ है और आज हम पर एतराज कर रहे है कि यह सब गलत बात कर रहे है। फिर असैम्बली मे स्पीच देते है कि हमने कोई जुल्म नही किया। अपने दिल पर हाथ रख कर देखे कि आपके क्या करनामे है ?

श्री अध्यक्ष : चौधरी दलसिंह जी, मैने अभी उनको 5 मिनट दिये है लेकिन आप कितना टाईम लेंगें ?

चौधरी दल सिंह : स्पीकर साहब,ख इन्होने मेरे खिलाफ जो बाते कही हैंकम से कम मैं जवाब तो दूंगा ही। मैं कहना चाहता हूं कि इन्होंने मार्किटिंग कमेटियों मे चल रहे प्रजातांत्रिक ढांचे को बदला है। .....

Shri Bansi Lal : On a Point of order, Sir. Is it personal explanation to discuss Market Committees ?

श्री अध्यक्ष : जो आपके बारे में कोई पर्सनल बात आई हो आप उसके बारे मे जवाब दे।

चौधरी दल सिंह : मेरा नाम उसमे लिया गया था। मार्किटिंग कमेटी के बारे में मुझ पर यह इल्जाम लगया गया कि मैंने कहा कि इनके मंत्री रिश्वत लेकर मार्किटिग कमेटी के मैंम्बर बनाते है। मार्किटिंग कमेटियां प्रजातन्त्र की निशानी थी आपने सिर्फ उनको इसलिए तौड़ा ताकि आप अपने लोगों को वहां पर लगा सके।

श्री बंसी लालः आन ए प्वाएंट आफ आर्डर, सर। इनकी बात सुन ली है अगर इनका नाम लेकर इनके खिलाफ कोई बात कही गई है उसका जवाब दे दें। इस प्वाएंट पर यह अपनी तकरीर में फिर जवाब दे दें।

श्री अध्यक्षः आप यह फरमाएं कि आपके खिलाफ यह बाते कही गई है। I have no time now. The remainder you can say in your Budget Speech.

चौधरी दल सिंहः दो मिनट और लूंगा। फिर मिनिस्टर साहब ने कहा कि बिल्ली के भाग्य से छीका टूटा जो मैं मंत्री बन गया था। इसके बारे में मैं अर्ज करूंगा कि पंडित भगवत दयाल की वजह से आप चीफ मिनिस्टर बन गए।

चौधरी दल सिंहः आपने जींद में अस्पताल बनाने की बात कही और वहां मेरे ठीक होने की बात कही, इस बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि जब तक आप मुख्यमंत्री रहेंगे न तो मैं बीमार हुंगा और न मरूंगा और न कभी अस्पताल में जाऊंगा।

श्री बंसी लालः मैं तो नहीं चाहता कि तुम अस्पताल जाओ। मैं तो चाहता हूं कि आप बिल्कुल ठीक रहें और तन्दरूस्त रहें।

श्री अध्यक्षः आपका टाईम खत्म हो गया है।

चौधरी दल सिंहः बस अभी खत्म करता हूं। ये कहते हैं कि दोबारा चुनकर नहीं आ सकते।

श्री अध्यक्षः वह तो सारी अपोजीशन के खिलाफ था।

चौधरी जय सिंह राठीः स्पीकर साहब, मैंने भी पर्सनल एक्सप्लेनेशन देना है।

श्री बंसी लालः अगर एक्सप्लेनेशनज का यही सिलसिला चलता रहा तो फिर हम कुछ कर ही नहीं सकेंगे। जहां तक इस बात का ताल्लुक है। It was political and not personal. (व्यवधान)

Mr. Speaker; Mr. Rathi, you are given only 5 minutes and no more.

चौधरी जय सिंह राठीः स्पीकर साहब, मेरे ऊपर सबसे पहला इलजाम यह लगया गया है कि मैंने इमपर्सोनेशन की थी

और दगाबाजी से दस्तखत करके दिए थे। यह बिल्कुल गलत बात है। अगर कोई सबूत है तो हाउस में रख दें, इन्कवारी करवा लें।

श्री बंसी लालः मैं करवा भी दूंगा।

चौधरी जय सिंह राठीः आप करवा लेना। स्पीकर साहब 420 का केस तो चीफ मिनिस्टर साहब भुगत कर आए हैं, मैंने ऐसा कभी नहीं किया। इनको चाहिए कि अपना इल्जाम मेरे ऊपर न ठोंसे। दूसरा इल्जाम स्पीकर साहब मेरे ऊपर यह लगाया गया कि मेरे भाई ने ट्रैक्टर बेचे और उनकी ब्लैक की और उसमें मैंने भी हिस्सा लिया। लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि मैंने कुछ नहीं लिया। इसमें जरा भी सच्चाई नहीं है। मेरे मुकाबले में चीफ मिनिस्टर साहब स्मगलिंग का केस भुगत कर आए हैं।

तीसरा इलजाम यह लगाया गया कि मैं आफीसर्ज को बुली करता हूं मेरे बुली करने का ताल्लुक पोसवाल साहब ने यह बताया कि मैं गरिवैंसिज कमेटी की मीटिंग्ज में नहीं आता।

गृहमंत्री (श्री के.एल. पोसवाल)ः मैंने यह कहा था कि सिर्फ दो दफा आए थे।

चौधरी जय सिंह राठीः बुंली करने के बारे में मेरा यह कहना है कि किसी अफसर ने अगर मेरी शिकायत की हो कि राठी ने यह कहा है तो वह मुझे बताई जाए। मैं तो इसी वजह से किसी अफसर से मिलता भी नहीं कि मैं किसी अफसर से मिला तो

इनकी सी.आई.डी. मेरे पीछे लग जाएगी और उस बेचारे को रगड़ा लगा दिया जाएगा।

चौथी बात यह कही कि मैंने कोई नाजायज काम करवाया और जब पता चला तो वह इन्होंने कैन्सल कर दिया।

श्री बंसी लालः इसने मुझ को डी.पी. सिंह को एग्रीकल्चर कमिश्नर बनवाने के लिए कहा। (शोर)

चौधरी जय सिंह राठीः अगर यह बात सही हो तो या तो चीफ मिनिस्टर साहब इस्तीफा दे दें या मैं दे दूंगा। (व्यवधान) इन्होंने कहा है कि मैं गल्त काम करवाने के लिए इनके पास गया और मैंने इनसे रिक्वैस्ट की। स्पीकर साहब, मैंने आज तक चीफ मिनिस्टर साहब से कोई भी काम करवाया ही नहीं, कहा ही नहीं। जायज या नाजायज काम के लिए कभी नहीं कहा।

पांचवी बात इन्होंने यह कही कि मैं आपके पास आया और कहा कि मैं डिप्टी वजीर बनना चाहता हूं। मुझे अफसोस है कि इसमें आपको कोट किया गया है। स्पीकर साहब यह इल्जाम मेरे ऊपर लगाया कि आपकी मौजूदगी में यह बात हुई है।

श्री अध्यक्षः मुझे कुछ नहीं मालूम। मैं तो न्यूट्रल हूं।

चौधरी जय सिंह राठीः जो मै कह रहा हूं वह मेरा जवाब है कि जिस दिन से मेरा इन से बेगाड़ हुआ है यानी जिस दिन यहां मिस्टर चव्हान 6 अगस्त को आए थे उसके बाद मैं कभी

भी श्री बंसी लाल चीफ मिनिस्टर से एक सैकंड के लिए भी नहीं मिला और न ही इनकी शक्ल देखी थी।

श्री बंसी लालः एक दिन तो मेरे पास आ रहे थे लेकिन जब प्रैस वाले रास्ते में मिल गए तो फिर वहां से उल्टा भाग गए और उसके बाद श्री बनारसी दास गुप्ता के साथ मुझे मिलने आए थे।

श्री बनारसी दास गुप्ताः स्पीकर साहब, चौधरी जय सिंह राठी कई दिन तक मेरे पीछे पड़े रहे कि मुझे गाड़ी अलाट करवा दो, इसलिए मैं इनको चीफ मिनिस्टर के पास लेकर गया था।

चौधरी जय सिंह राठीः स्पीकर साहब, मैं तो सियासी आदमी हूं और हमारी चार पुश्तें सियास्त में चली गई हैं। एक सियासी आदमी दूसरे सियासी आदमी के साथ तो समझौता कर सकता है लेकिन किसी मरासी और सक्के के साथ नहीं कर सकता।

DISCUSSION ON GOVERNOR'S ADDRESS (RESUMPTION)

डाक्टर रामेश्वर दास गुप्ता (जगाधरी): स्पीकर साहब, मैं सिर्फ इतनी ही अर्ज करता हूं कि सरकार को यह मालूम है कि हमारे जिला अम्बाला में गन्ने की बहुत पैदावार होती है। इसलिए वहां पर गन्ने की खपत करने के लिए हमारी सरकार को चाहिए

कि वहां पर कोई शूगर मिल लगाए ताकि जो किसान हैं उनको पूरा फायदा पहुंचे और उनका हौसला बढ़े।

श्री बंसी लाल: स्पीकर साहब, हम अम्बाला के जिला में शूगर मिल लगवाने की कोशिश्ज्ञ करेंगे।

Mr. Speaker: Question is:-

That an address be presented to the Governor in the following terms:-

"That the Members of Haryana Vidhan Sabha, assembled in this session, are deeply grateful to the Governor 'for the addrss, which he has been pleased to deliver to the House on 8th February, 1971."

The motion was carried.

Mr. Speaker: The HOuse now stands adjourned till 2.00 P.M. today.

12.54 P.M.

(The House then adjourned till 2.00 P.M. on Firday, the 12th February, 1971.)